Website Link: mib.gov.in

जनवरी 2024

देव से देश

मन की बात

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का सम्बोधन

सूची क्रम

01 प्रधानमंत्री का सन्देश 1

02 मुख्य आलेख

2.1 **अयोध्या में प्राण-प्रतिष्ठा :** भारत के सांस्कृतिक कायाकल्प का क्षण 16

2.2 **भारतीय लोकतंत्र का उत्सव :** चुनाव आयोग की विरासत 40

03 संक्षेप में

3.1 **बाधाओं को तोड़ती महिला शक्ति की चमक :** गणतंत्र दिवस परेड 2024 24

3.2 **राष्ट्र का गौरव :** अर्जुन पुरस्कार विजेता बेटियों से प्रेरित होंगी पीढ़ियाँ 26

3.3 **भारत में महिला सशक्तिकरण :** मार्ग प्रशस्त करते स्वयं सहायता समूह 28

3.4 **पीपुल्स पद्म :** उत्कृष्टता और निःस्वार्थ सेवा को सम्मान 30

3.5 **पारम्परिक भारतीय चिकित्सा का आधुनिकीकरण** 32

3.6 **हमर हाथी–हमर गोठ :** छत्तीसगढ़ में रेडियो की ताकत 38

3.7 **बीच गेम्स 2024, दीव :** सूर्य, रेत और खेल का संगम 46

3.8 **परीक्षा पे चर्चा 2024** 50

04 लेख/साक्षात्कार

4.1 राम के आदर्शों को साकार करते राष्ट्र की परिकल्पना : **चम्पत राय** 20

4.2 अमृतकाल में वैश्विक स्वास्थ्य सेवाओं के लिए पारम्परिक चिकित्सा को मजबूत करता - WHO ICD-11 TM मॉड्यूल 2 : **राजेश कोटेचा** 36

4.3 सभा से संसद तक - भारत के विकसित लोकतंत्र के स्तंभ : **सच्चिदानंद जोशी** 44

4.4 दीव बीच गेम्स 2024 - भारत के खेल परिदृश्य में एक मील का पत्थर : **अनुराग सिंह ठाकुर** 48

05 प्रतिक्रियाएँ 53

प्रधानमंत्री का सन्देश

मेरे प्यारे देशवासियो, नमस्कार

2024 का ये पहला 'मन की बात' का कार्यक्रम है। अमृतकाल में एक नई उमंग है, नई तरंग है। **दो दिन पहले हम सभी देशवासियों ने 75वाँ गणतंत्र दिवस बहुत धूमधाम से मनाया है। इस साल हमारे संविधान के भी 75 वर्ष हो रहे हैं और सुप्रीम कोर्ट के भी 75 वर्ष हो रहे हैं। हमारे लोकतंत्र के ये पर्व, मदर ऑफ़ डेमोक्रेसी के रूप में भारत को और सशक्त बनाते हैं।** भारत का संविधान इतने गहन मंथन के बाद बना है कि उसे जीवंत दस्तावेज कहा जाता है। **इसी संविधान की मूल प्रति के तीसरे अध्याय में भारत के नागरिकों के मूलभूत अधिकारों का वर्णन किया गया है और ये बहुत दिलचस्प है कि तीसरे अध्याय के प्रारम्भ में हमारे संविधान निर्माताओं ने भगवान राम, माता सीता और लक्ष्मण जी के चित्रों को स्थान दिया था। प्रभु राम का शासन, हमारे संविधान निर्माताओं के**

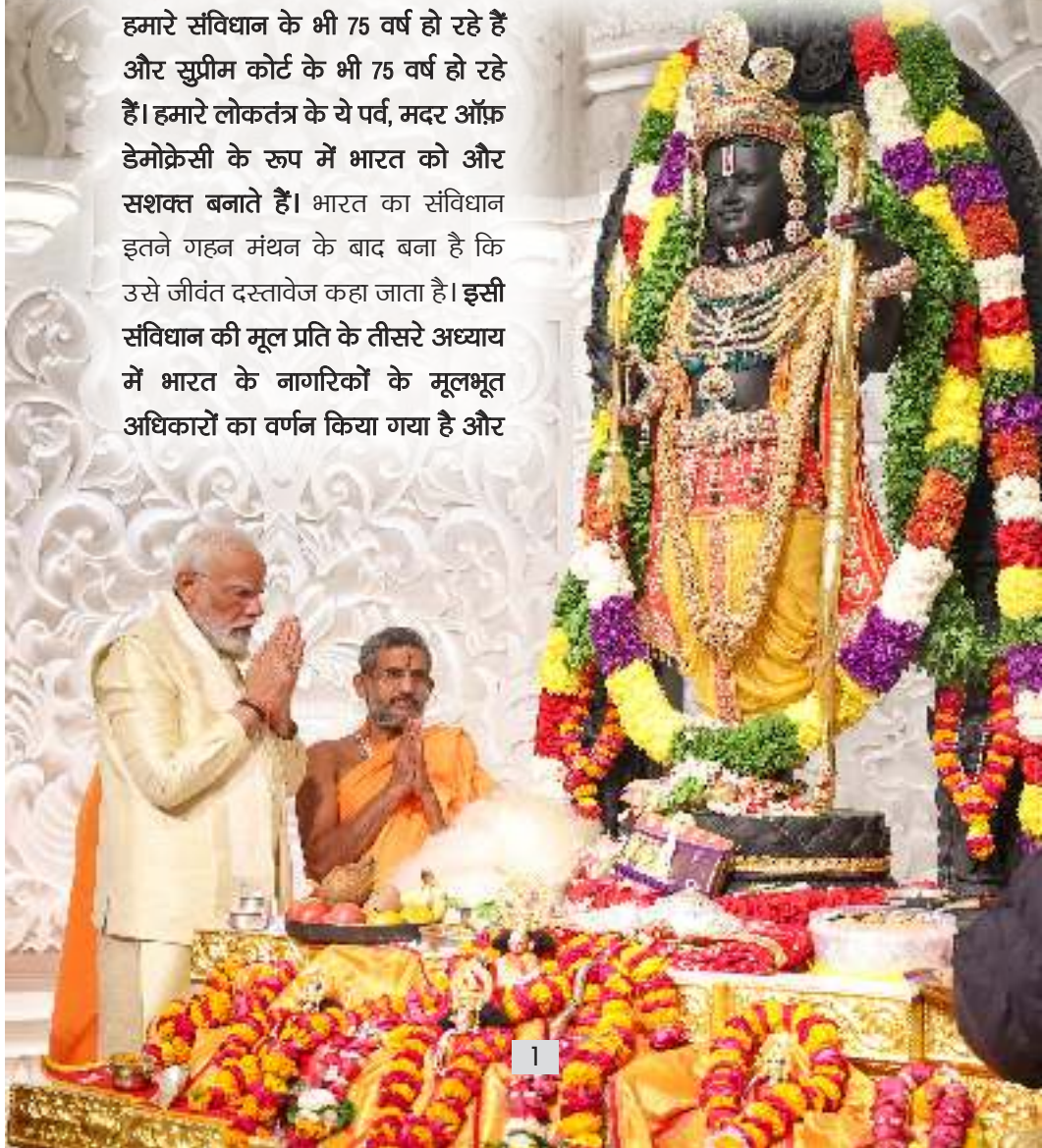

लिए भी प्रेरणा का स्रोत था और इसलिए 22 जनवरी को अयोध्या में मैंने 'देव से देश' की बात की थी, 'राम से राष्ट्र' की बात की थी।

75वाँ गणतंत्र दिवस

साथियो, अयोध्या में प्राण-प्रतिष्ठा के अवसर ने देश के करोड़ों लोगों को मानो एक सूत्र में बाँध दिया है। सबकी भावना एक, सबकी भक्ति एक, सबकी बातों में राम, सबके हृदय में राम। देश के अनेकों लोगों ने इस दौरान राम भजन गाकर उन्हें श्रीराम के चरणों में समर्पित किया। **22 जनवरी की शाम को पूरे देश ने रामज्योति जलाई, दीवाली मनाई। इस दौरान देश ने सामूहिकता की शक्ति देखी, जो विकसित भारत के हमारे संकल्पों का भी बहुत बड़ा आधार है।** मैंने देश के लोगों से आग्रह किया था कि मकर संक्रांति से 22 जनवरी तक स्वच्छता का अभियान चलाया जाए। मुझे अच्छा लगा कि लाखों लोगों ने श्रद्धाभाव से जुड़कर अपने क्षेत्र के धार्मिक स्थलों की साफ़-सफाई की। मुझे कितने ही लोगों ने इससे जुड़ी तस्वीरें भेजी हैं, वीडियो भेजे हैं। ये भावना रुकनी नहीं चाहिए, ये अभियान रुकना नहीं चाहिए। **सामूहिकता की यही शक्ति, हमारे देश को सफलता की नई ऊँचाई पर पहुँचाएगी।**

गणतंत्र दिवस में नारी शक्ति की भावना

शीतल देवी, पैरा तीरंदाज़ी

दीक्षा डागर, गोल्फ़

आर. वैशाली, शतरंज

मेरे प्यारे देशवासियो, इस बार 26 जनवरी की परेड बहुत ही अद्भुत रही, लेकिन सबसे ज्यादा चर्चा परेड में वीमेन पॉवर को देखकर हुई, जब कर्तव्य पथ पर केंद्रीय सुरक्षा बलों और दिल्ली पुलिस की महिला टुकड़ियों ने कदमताल शुरू किया तो सभी गर्व से भर उठे। महिला बैंड का मार्च देखकर, उनका जबरदस्त तालमेल देखकर, देश-विदेश में लोग झूम उठे। इस बार परेड में मार्च करने वाले 20 दस्तों में से 11 दस्ते महिलाओं के ही थे। हमने देखा कि जो झाँकी निकली, उसमें भी सभी महिला कलाकार ही थीं। जो सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए, उसमें भी करीब डेढ़ हज़ार बेटियों ने हिस्सा लिया था। कई महिला कलाकार शंख, नादस्वरम और नागदा जैसे भारतीय संगीत वाद्ययंत्र बजा रही थीं। DRDO ने जो झाँकी निकाली, उसने भी सभी का ध्यान खींचा। उसमें दिखाया गया कि कैसे नारीशक्ति जल-थल-नभ, साइबर और स्पेस, हर क्षेत्र में देश की सुरक्षा कर रही है। 21वीं सदी का भारत, ऐसे ही वीमेन लेड डेवलपमेंट के मंत्र के साथ आगे बढ़ रहा है।

साथियो, आपने कुछ दिन पहले ही अर्जुन अवार्ड समारोह को भी देखा होगा। इसमें राष्ट्रपति भवन में देश के कई होनहार खिलाड़ियों और एथलीटों को सम्मानित किया गया है। यहाँ भी जिस एक बात ने लोगों का खूब ध्यान खींचा, वो थी अर्जुन पुरस्कार पाने वाली बेटियाँ और उनकी लाइफ जर्नी। **इस बार 13 वीमेन एथलीट्स को अर्जुन अवार्ड से सम्मानित किया गया है। इन वीमेन एथलीट्स ने अनेकों बड़े टूर्नामेंटों में हिस्सा लिया और भारत का परचम लहराया। शारीरिक चुनौतियाँ, आर्थिक चुनौतियाँ, इन साहसी और टैलेंटेड**

खिलाड़ियों के आगे टिक नहीं पाईं। बदलते हुए भारत में, हर क्षेत्र में हमारी बेटियाँ, देश की महिलाएँ कमाल करके दिखा रही हैं। एक और क्षेत्र है, जहाँ महिलाओं ने अपना परचम लहराया है, वो है– सेल्फ हेल्प ग्रुप। **आज वीमेन सेल्फ हेल्प ग्रुप की देश में संख्या भी बढ़ी है और उनके काम करने के दायरे का भी बहुत विस्तार हुआ है।** वो दिन दूर नहीं, जब आपको गाँव-गाँव में खेतों में, नमो ड्रोन दीदियाँ ड्रोन के माध्यम से खेती में मदद करती हुई दिखाई देंगी। मुझे यूपी के बहराइच में स्थानीय चीजों के उपयोग से बायो फ़र्टिलाइज़र और बायो पेस्टिसाइड तैयार करने वाली महिलाओं के बारे में पता चला। सेल्फ हेल्प ग्रुप्स से जुड़ी निबिया बेग़मपुर गाँव की महिलाएँ, गाय के गोबर, नीम की पत्तियाँ और कई तरह के औषधीय पौधों को मिलाकर, बायो फ़र्टिलाइज़र तैयार करती हैं। इसी तरह ये महिलाएँ अदरक, लहसुन, प्याज और मिर्च का पेस्ट बनाकर आर्गेनिक पेस्टिसाइड भी तैयार करती हैं। इन महिलाओं ने मिलकर 'उन्नति जैविक इकाई' नाम का एक संगठन बनाया है। ये संगठन बायो प्रोडक्ट्स को तैयार करने में इन महिलाओं की मदद करता है। इनके द्वारा बनाए गए बायो फ़र्टिलाइज़र और बायो पेस्टिसाइड की माँग भी लगातार बढ़ रही है। आज आस-पास के गाँवों के 6 हज़ार से ज़्यादा किसान इनसे बायो प्रोडक्ट्स खरीद रहे हैं। इससे सेल्फ हेल्प ग्रुप से जुड़ी इन महिलाओं की आय बढ़ी है और उनकी आर्थिक स्थिति भी बेहतर हुई है।

मेरे प्यारे देशवासियो, 'मन की बात' में हम ऐसे देशवासियों के प्रयासों को सामने लाते हैं, जो नि:स्वार्थ भावना के साथ समाज को, देश को सशक्त करने का काम कर रहे हैं। **ऐसे में, तीन दिन पहले जब देश ने पद्म पुरस्कारों का ऐलान किया है, तो 'मन की बात' में ऐसे लोगों की चर्चा स्वाभाविक है। इस बार भी ऐसे अनेकों देशवासियों को पद्म सम्मान दिया गया है, जिन्होंने ज़मीन से जुड़कर समाज में बड़े-बड़े बदलाव लाने का काम किया है। इन इन्स्पायरिंग लोगों की जीवन-यात्रा के बारे में जानने को लेकर देश-भर में बहुत उत्सुकता दिखी है। मीडिया की हेडलाइंस से दूर, अखबारों के फ्रंट पेज से दूर, ये लोग बिना किसी लाइम-लाइट के समाज सेवा में जुटे थे।** हमें इन लोगों के बारे में पहले शायद ही कुछ देखने-सुनने को मिला है, लेकिन अब मुझे ख़ुशी है कि पद्म सम्मान घोषित होने के बाद ऐसे लोगों की हर तरफ चर्चा हो रही है, लोग उनके बारे में ज़्यादा-से-ज़्यादा जानने के लिए उत्सुक हैं। पद्म पुरस्कार पाने वाले ये अधिकतर लोग अपने-अपने क्षेत्र में काफी अनूठे काम कर रहे हैं, जैसे कोई एम्बुलेंस सर्विस मुहैया करवा रहा है, तो कोई बेसहारों के लिए सिर पर छत का इंतजाम कर रहा है। कुछ ऐसे भी हैं, जो हज़ारों पेड़ लगाकर प्रकृति-संरक्षण के प्रयासों में जुटे हैं। एक ऐसे भी हैं, जिन्होंने चावल की 650 से अधिक किस्मों के संरक्षण का काम किया है। एक ऐसे भी हैं, जो ड्रग्स और शराब की लत की रोकथाम के लिए समाज में जागरूकता फैला रहे हैं। कई लोग तो सेल्फ हेल्प ग्रुप, विशेषकर नारी शक्ति के अभियान से लोगों को जोड़ने में जुटे हैं। **देशवासियों में इस बात को लेकर भी बहुत प्रसन्नता है कि सम्मान पाने वालों में 30 महिलाएँ हैं। ये महिलाएँ ज़मीनी स्तर पर अपने कार्यों से समाज और देश को आगे ले जा रही हैं।**

साथियो, पद्म सम्मान पाने वालों में हर किसी का योगदान देशवासियों को प्रेरित करने वाला है। इस बार सम्मान पाने वालों में बड़ी संख्या उन लोगों की है, जो शास्त्रीय नृत्य, शास्त्रीय संगीत, लोक नृत्य, थिएटर और भजन की दुनिया में देश का नाम रोशन कर रहे हैं। **प्राकृत, मालवी और लम्बाडी भाषा में बहुत ही शानदार काम करने वालों को भी ये सम्मान दिया गया है। विदेश के भी कई**

लोगों को पद्म पुरस्कार से सम्मानित किया गया है, जिनके कार्यों से भारतीय संस्कृति और विरासत को नई ऊँचाई मिल रही है। इनमें फ्रांस, ताइवान, मैक्सिको और बाँग्लादेश के नागरिक भी शामिल हैं।

साथियो, मुझे इस बात की बहुत खुशी है कि पिछले एक दशक में पद्म सम्मान का सिस्टम पूरी तरह से बदल चुका है। अब ये पीपुल्स पद्म बन चुका है। पद्म सम्मान देने की व्यवस्था में कई बदलाव भी हुए हैं। अब इसमें लोगों के पास ख़ुद को भी नोमिनेट करने का मौका रहता है। यही वजह है कि इस बार 2014 की तुलना में 28 गुना ज्यादा नोमिनेशन प्राप्त हुए हैं। इससे पता चलता है कि पद्म सम्मान की प्रतिष्ठा, उसकी विश्वसनीयता, उसके प्रति सम्मान, हर वर्ष बढ़ता जा रहा है। मैं पद्म सम्मान पाने वाले सभी लोगों को फिर अपनी शुभकामनाएँ देता हूँ।

मेरे प्यारे देशवासियो, कहते हैं, हर जीवन का एक लक्ष्य होता है, हर कोई एक लक्ष्य को पूरा करने के लिए ही जन्म लेता है। इसके लिए लोग पूरी निष्ठा से अपने कर्तव्यों का पालन करते हैं। हमने देखा है कि कोई समाज सेवा के माध्यम से, कोई सेना में भर्ती होकर, कोई अगली पीढ़ी को पढ़ाकर अपने कर्तव्यों का पालन करता है, लेकिन **साथियो, हमारे बीच ही कुछ लोग ऐसे भी होते हैं, जो जीवन के अंत के बाद भी समाज जीवन के प्रति अपने दायित्वों को निभाते हैं और इसके लिए उनका माध्यम होता है – अंगदान।** हाल के वर्षों में देश में एक हज़ार से अधिक लोग ऐसे रहे हैं, जिन्होंने अपनी मृत्यु के बाद अपने अंगों का दान कर दिया। ये निर्णय आसान नहीं होता, लेकिन ये निर्णय कई ज़िन्दगियों

को बचाने वाला होता है। मैं उन परिवारों की भी सराहना करूँगा, जिन्होंने अपने करीबियों की आखिरी इच्छा का सम्मान किया। आज देश में बहुत से संगठन भी इस दिशा में बहुत प्रेरक प्रयास कर रहे हैं। कुछ संगठन लोगों को अंगदान के लिए जागरूक कर रहे हैं, कुछ संस्थाएँ अंगदान करने के इच्छुक लोगों का रजिस्ट्रेशन कराने में मदद कर रही हैं। ऐसे प्रयासों से देश में ऑर्गन डोनेशन के प्रति सकारात्मक माहौल बन रहा है और लोगों की ज़िन्दगियाँ भी बच रही हैं।

मेरे प्यारे देशवासियो, अब मैं आपसे भारत की एक ऐसी उपलब्धि साझा कर रहा हूँ, जिससे मरीजों का जीवन आसान बनेगा, उनकी परेशानी कुछ कम होगी। आप में से कई लोग होंगे, जिन्हें इलाज के लिए आयुर्वेद, सिद्ध या यूनानी की चिकित्सा पद्धति से मदद मिलती है, लेकिन इनके मरीजों को तब समस्या होती है, जब इसी पद्धति के किसी दूसरे डॉक्टर के पास जाते हैं। इन चिकित्सा पद्धतियों में बीमारी के नाम, इलाज और दवाइयों के लिए एक जैसी भाषा का इस्तेमाल नहीं होता है। हर चिकित्सक अपने तरीके से बीमारी का नाम और इलाज के तौर-तरीके लिखता है। इससे दूसरे चिकित्सक के लिए समझ पाना कई बार बहुत मुश्किल हो जाता है। दशकों से चली आ रही इस समस्या का भी अब समाधान खोज लिया गया है। मुझे ये बताते हुए खुशी हो रही है कि **आयुष मंत्रालय ने आयुर्वेद, सिद्ध और यूनानी चिकित्सा से जुड़े डेटा और शब्दावली का वर्गीकरण किया है। इसमें विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भी मदद की है। दोनों के प्रयासों से आयुर्वेद, यूनानी और सिद्ध चिकित्सा में बीमारी और इलाज से जुड़ी शब्दावली की कोडिंग कर दी गई है। इस कोडिंग की मदद से अब सभी डॉक्टर प्रिस्क्रिप्शन या अपनी पर्ची पर एक जैसी भाषा लिखेंगे। इसका एक फायदा ये होगा कि अगर आप वो पर्ची लेकर दूसरे डॉक्टर के पास जाएँगे तो डॉक्टर को इसकी पूरी जानकारी उस पर्ची से ही मिल जाएगी।** आपकी बीमारी, इलाज, कौन-कौन सी दवाएँ चली हैं, कब से इलाज चल रहा है, आपको किन चीज़ों से एलर्जी है, ये सब जानने में उस पर्ची से मदद मिलेगी। इसका एक और फायदा उन लोगों को होगा, जो रिसर्च के

प्राचीन ज्ञान, वैश्विक भाषा

भारतीय पारम्परिक चिकित्सा शब्दावली का मानकीकरण

काम से जुड़े हैं। दूसरे देशों के वैज्ञानिकों को भी बीमारी, दवाएँ और उसके प्रभाव की पूरी जानकारी मिल जाएगी। रिसर्च बढ़ने और कई वैज्ञानिकों के साथ-साथ जुड़ने से ये चिकित्सा पद्धति और बेहतर परिणाम देंगी और लोगों का इनके प्रति झुकाव बढ़ेगा। मुझे विश्वास है, इन आयुष पद्धतियों से जुड़े हमारे चिकित्सक इस कोडिंग को जल्द से जल्द अपनाएँगे।

मेरे साथियो, जब आयुष चिकित्सा पद्धति की बात कर रहा हूँ, तो मेरी आँखों के सामने यानुंग जामोह लैगो की भी तस्वीर आ रही है। सुश्री यानुंग अरुणाचल प्रदेश की रहने वाली हैं और हर्बल औषधीय विशेषज्ञ हैं। इन्होंने आदि जनजाति की पारम्परिक चिकित्सा प्रणाली को पुनर्जीवित करने के लिए काफी काम किया है। इस योगदान के लिए उन्हें इस बार पद्म सम्मान भी दिया गया है। इसी तरह इस बार छत्तीसगढ़ के हेमचंद मांझी; उनको भी पद्म सम्मान मिला है। वैद्यराज हेमचंद मांझी भी आयुष चिकित्सा पद्धति की मदद से लोगों का इलाज करते हैं। छत्तीसगढ़ के नारायणपुर में गरीब मरीजों की सेवा करते हुए उन्हें 5 दशक से ज़्यादा का समय हो रहा है। हमारे देश में आयुर्वेद और हर्बल मेडिसिन का जो ख़ज़ाना छिपा है, उसके संरक्षण में सुश्री यानुंग और हेमचंद जी जैसे लोगों की बहुत बड़ी भूमिका है।

मेरे प्यारे देशवासियो, 'मन की बात' के जरिए हमारा और आपका जो रिश्ता बना है, वो एक दशक पुराना हो चुका है। सोशल मीडिया और इंटरनेट के इस दौर में भी रेडियो पूरे देश को जोड़ने का एक सशक्त माध्यम है। रेडियो की ताकत कितना बदलाव ला सकती है, इसकी एक अनूठी मिसाल छत्तीसगढ़ में देखने को मिल रही है। बीते करीब 7 वर्षों से यहाँ रेडियो पर एक लोकप्रिय कार्यक्रम का प्रसारण हो रहा है, जिसका नाम है 'हमर हाथी – हमर गोठ'। नाम सुनकर आपको लग सकता है कि रेडियो और हाथी का भला क्या कनेक्शन हो सकता है? लेकिन यही तो रेडियो की खूबी है। छत्तीसगढ़ में आकाशवाणी के चार केंद्रों अम्बिकापुर, रायपुर, बिलासपुर और रायगढ़ से हर शाम इस कार्यक्रम का प्रसारण होता है और आपको जानकर हैरानी होगी कि छत्तीसगढ़ के जंगल और उसके आस-पास के इलाके में रहने वाले बड़े ध्यान से इस कार्यक्रम को सुनते हैं। **'हमर हाथी – हमर गोठ' कार्यक्रम में बताया जाता है कि हाथियों का झुंड जंगल के किस इलाके से गुजर रहा है। ये जानकारी यहाँ के लोगों के बहुत काम आती है। लोगों को जैसे ही रेडियो से हाथियों के झुंड के आने की जानकारी मिलती है, वो सावधान हो जाते हैं। जिन रास्तों से हाथी गुजरते हैं, उधर जाने का ख़तरा टल जाता है।** इससे जहाँ एक ओर हाथियों के झुंड से नुकसान की सम्भावना कम हो रही है, वहीं हाथियों के बारे में डाटा जुटाने में मदद मिलती है। इस डाटा के उपयोग से भविष्य में हाथियों के संरक्षण में भी मदद मिलेगी। यहाँ हाथियों से जुड़ी जानकारी सोशल मीडिया के ज़रिए भी लोगों तक पहुँचाई जा रही है। **इससे जंगल के आस-पास रहने वाले लोगों को हाथियों के साथ तालमेल बिठाना आसान हो गया है। छत्तीसगढ़ की इस अनूठी पहल और इसके अनुभवों का लाभ देश के दूसरे वन क्षेत्रों में रहने वाले लोग भी उठा सकते हैं।**

मेरे प्यारे देशवासियो, इसी 25 जनवरी को हम सभी ने नेशनल वोटर्स डे मनाया है। ये हमारी गौरवशाली लोकतांत्रिक परम्पराओं के लिए एक

छत्तीसगढ़ के 'हमर हाथी – हमर गोठ' से बच रही जानें

अहम दिन है। आज देश में करीब-करीब 96 करोड़ मतदाता हैं। आप जानते हैं, ये आँकड़ा कितना बड़ा है? ये अमरीका की कुल जनसंख्या से भी करीब तीन गुना है। ये पूरे यूरोप की कुल जनसंख्या से भी करीब डेढ़ गुना है। अगर मतदान केंद्रों की बात करें, तो देश में आज उनकी संख्या करीब साढ़े दस लाख है। **भारत का हर नागरिक, अपने लोकतांत्रिक अधिकार का इस्तेमाल कर पाए, इसके लिए हमारा चुनाव आयोग, ऐसे स्थानों पर भी पोलिंग बूथ बनवाता है, जहाँ सिर्फ एक वोटर हो।** मैं चुनाव आयोग की सराहना करना चाहूँगा, जिसने देश में लोकतांत्रिक मूल्यों को मजबूत करने के लिए निरंतर प्रयास किए हैं।

साथियो, आज देश के लिए उत्साह की बात ये भी है कि **दुनिया के अनेक देशों में जहाँ वोटिंग पर सेंट कम हो रहा है, भारत में मतदान का प्रतिशत बढ़ता जा रहा है। 1951-52 में जब देश में पहली बार चुनाव हुए थे, तो लगभग 45 प्रतिशत वोटर्स ने ही वोट डाले थे। आज ये आँकड़ा काफी बढ़ चुका है। देश में ना सिर्फ वोटरों की संख्या में वृद्धि हुई है, बल्कि टर्नआउट भी बढ़ा है।** हमारे युवा वोटरों को रजिस्ट्रेशन के लिए ज़्यादा मौके मिल सकें, इसके लिए सरकार ने कानून में भी परिवर्तन किया है। मुझे ये देखकर भी अच्छा लगता है कि वोटर्स के बीच जागरूकता बढ़ाने के लिए सामुदायिक स्तर पर भी कई प्रयास हो रहे हैं। **कहीं लोग घर-घर जाकर वोटर्स को मतदान के बारे में बता रहे हैं, कहीं पेंटिंग बनाकर, कहीं नुक्कड़ नाटकों के जरिए युवाओं को आकर्षित किया जा रहा है। ऐसे हर प्रयास, हमारे लोकतंत्र के उत्सव में, अलग-अलग रंग भर रहे हैं। मैं 'मन की बात' के माध्यम से अपने फर्स्ट टाइम वोटर्स को कहूँगा कि वो वोटर लिस्ट में अपना नाम ज़रूर जुड़वाएँ।** नेशनल वोटर सर्विस पोर्टल और वोटर हेल्पलाइन ऐप के जरिए वो इसे आसानी से ऑनलाइन पूरा कर सकते हैं। आप ये हमेशा याद रखें कि आपका एक वोट देश

लाला लाजपत राय

28 जनवरी, 1865 – 17 नवम्बर, 1928

- पंजाब केसरी के नाम से मशहूर
- पंजाब नेशनल बैंक के संस्थापक सदस्यों में से एक
- 'लाल बाल पाल' तिकड़ी के सदस्यों में से एक

का भाग्य बदल सकता है, देश का भाग्य बना सकता है।

मेरे प्यारे देशवासियो, आज 28 जनवरी को भारत की दो ऐसी महान विभूतियों की जन्म-जयंती भी होती है, जिन्होंने अलग-अलग कालखंड में देशभक्ति की मिसाल कायम की है। आज देश पंजाब केसरी लाला लाजपत राय जी को श्रद्धांजलि दे रहा है। लाला जी स्वतंत्रता संग्राम के एक ऐसे सेनानी रहे, जिन्होंने विदेशी शासन से मुक्ति दिलाने के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी। लाला जी के व्यक्तित्व को सिर्फ आज़ादी की लड़ाई तक सीमित नहीं किया जा सकता। वो बहुत दूरदर्शी थे। उन्होंने पंजाब नेशनल बैंक और कई अन्य संस्थाओं के निर्माण में अहम भूमिका निभाई थी। उनका उद्देश्य सिर्फ विदेशियों को देश से बाहर निकालना ही नहीं, बल्कि देश को आर्थिक मजबूती देने का विज़न भी उनके चिंतन का अहम् हिस्सा था। उनके विचारों और उनके बलिदान ने भगत सिंह को बहुत प्रभावित किया था। आज **फील्ड मार्शल के.एम. करिअप्पा जी** को भी श्रद्धापूर्वक नमन करने का दिन है। **उन्होंने इतिहास के महत्त्वपूर्ण दौर में हमारी सेना का नेतृत्व कर साहस और शौर्य की मिसाल कायम की थी। हमारी सेना को शक्तिशाली बनाने में उनका महत्त्वपूर्ण योगदान है।**

मेरे प्यारे देशवासियो, आज खेलों की दुनिया में भी भारत नित नई ऊँचाइयों को छू रहा है। स्पोर्ट्स की दुनिया में आगे

फील्ड मार्शल के.एम. करिअप्पा

28 जनवरी, 1899 – 15 मई, 1993

- भारतीय सेना के प्रथम कमांडर-इन-चीफ
- बटालियन की कमान सम्भालने वाले पहले भारतीय अधिकारी
- फील्ड मार्शल की 5-स्टार रैंक रखने वाले केवल दो भारतीय सेना अधिकारियों में से एक

बढ़ने के लिए ज़रूरी है कि खिलाड़ियों को ज़्यादा-से-ज़्यादा खेलने का मौका मिले और देश में भली-भाँति के स्पोर्ट्स टूर्नामेंट भी आयोजित हों। इसी सोच के साथ आज भारत में नए-नए स्पोर्ट्स टूर्नामेंट आयोजित किए जा रहे हैं। **कुछ दिन पहले ही चेन्नई में खेलो इंडिया यूथ गेम्स का उद्घाटन किया। इसमें देश के 5 हज़ार से ज़्यादा एथलीट्स हिस्सा ले रहे हैं। मुझे ख़ुशी है कि आज भारत में लगातार ऐसे नए प्लेटफॉर्म तैयार हो रहे हैं, जिनमें खिलाड़ियों को अपना सामर्थ्य दिखाने का मौका मिल रहा है।** ऐसा ही एक प्लेटफार्म बना है –बीच गेम्स का, दीव के अंदर उसका आयोजन हुआ था। आप जानते ही हो 'दीव' केंद्रशासित प्रदेश है, सोमनाथ के बिलकुल पास है। इस साल की शुरुआत में ही दीव में इन बीच गेम्स का आयोजन किया गया। ये भारत का पहला मल्टी स्पोर्ट्स बीच गेम्स था। इनमें टेग ऑफ़ वार, सी स्वीमिंग, पेंचक सिलेट, मलखम्ब, बीच वॉलीबॉल, बीच कबड्डी, बीच सॉकर और बीच बॉक्सिंग जैसे कम्पटीशन हुए। इनमें हर प्रतियोगी को अपनी प्रतिभा दिखाने का भरपूर मौका मिला और आपको जानकर हैरानी होगी कि इस टूर्नामेंट में ऐसे राज्यों से भी बहुत से खिलाड़ी आए, जिनका दूर-दूर तक समंदर से कोई नाता नहीं है। इस टूर्नामेंट में सबसे ज्यादा मैडल भी मध्यप्रदेश ने जीते, जहाँ कोई सी बीच नहीं है। खेलों के प्रति यही टेम्परामेंट किसी भी देश को स्पोर्ट्स की दुनिया का सरताज बनाता है।

मेरे प्यारे देशवासियो, 'मन की बात' में इस बार मेरे साथ इतना ही। फ़रवरी में आपसे फिर एक बार बात होगी। **देश के लोगों के सामूहिक प्रयासों से, व्यक्तिगत प्रयासों से कैसे देश आगे बढ़ रहा है, इसी पर हमारा फोकस होगा।** साथियो, कल 29 तारीख़ को सुबह 11 बजे हम 'परीक्षा पे चर्चा' भी करेंगे। 'परीक्षा पे चर्चा' का ये 7वाँ संस्करण होगा। एक ऐसा कार्यक्रम है, जिसका मैं हमेशा इंतज़ार करता हूँ। इससे मुझे स्टूडेंट्स के साथ बातचीत करने का मौका मिलता है और मैं उनके परीक्षा सम्बंधी तनाव को कम करने का भी प्रयास करता हूँ। **पिछले 7 वर्षों में 'परीक्षा पे चर्चा' शिक्षा और परीक्षा से सम्बंधित कई मुद्दों पर बातचीत करने का एक बहुत अच्छा माध्यम बनकर उभरा है। मुझे ख़ुशी है कि इस बार सवा दो करोड़ से अधिक विद्यार्थियों ने इसके लिए रजिस्ट्रेशन कराया है और अपने इनपुट भी दिए हैं। मैं आपको बता दूँ कि जब हमने पहली बार 2018 में ये कार्यक्रम शुरू किया था तो ये संख्या केवल 22,000 थी। स्टूडेंट्स** को प्रेरित करने के लिए और परीक्षा के तनाव के बारे में जागरूकता फ़ैलाने के लिए बहुत से अभिनव प्रयास भी किए गए हैं। मैं आप सभी से, विशेषकर युवाओं से, विद्यार्थियों से आग्रह करूँगा कि वे कल रिकॉर्ड संख्या में शामिल हों। मुझे भी आपसे बात करके बहुत अच्छा लगेगा। इन्हीं शब्दों के साथ मैं 'मन की बात' के इस एपिसोड में आपसे विदा लेता हूँ। जल्द ही फिर मिलेंगे।

धन्यवाद।

'मन की बात' सुनने के लिए QR कोड स्कैन करें।

मन की बात

प्रधानमंत्री द्वारा विशेष उल्लेख

अयोध्या में प्राण-प्रतिष्ठा

भारत के सांस्कृतिक कायाकल्प का क्षण

"यह ध्यान देने योग्य है कि संविधान के भाग तीन की शुरुआत में, हमारे संविधान निर्माताओं ने भगवान राम, माता सीता और लक्ष्मण जी के चित्रों को उचित स्थान दिया था। प्रभु राम का शासन हमारे संविधान निर्माताओं के लिए भी प्रेरणा का स्रोत था और इसीलिए 22 जनवरी को अयोध्या में मैंने 'देव से देश' की बात कही थी... मैंने 'राम से राष्ट्र' की बात की थी। साथियो, अयोध्या में प्राण-प्रतिष्ठा का अवसर देश के करोड़ों लोगों को एक सूत्र में बाँधता हुआ नज़र आ रहा है। सबकी भावना एक है, सबकी भक्ति एक है... सबकी बातों में राम हैं, सबके दिल में राम हैं।"

-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
('मन की बात' सम्बोधन में)

"अयोध्या का आध्यात्मिक लगाव सिर्फ हिन्दू धर्म से ही नहीं, बल्कि अन्य धर्मों से भी है। जैन धर्मग्रंथों का मानना है कि यह नगरी उनके पाँच 'तीर्थंकरों' का जन्म स्थान है। बौद्ध धर्मावलम्बियों के अनुसार गौतम बुद्ध ने वहाँ उपदेश दिया था।"

-चम्पत राय
महासचिव, श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट

22 जनवरी, 2024 को अयोध्या में राम जन्मभूमि मंदिर में रामलला का प्राण-प्रतिष्ठा समारोह आयोजित किया गया था। यह भव्य समारोह आधुनिक भारतीय इतिहास में सबसे बड़े युग को परिभाषित करने वाला क्षण है। मंदिर जीवंत हो उठा और पूरे देश में जश्न मनाया गया। हर तबके के भारतीयों ने प्रभु राम की अपनी जन्मभूमि पर वापसी की खुशी मनाई।

इस ऐतिहासिक प्राण-प्रतिष्ठा समारोह में देश के प्रमुख आध्यात्मिक समूहों और धार्मिक सम्प्रदायों के गुरुओं और प्रतिनिधियों की भागीदारी देखी गई। समारोह में विभिन्न आदिवासी समुदायों के प्रतिनिधिमंडलों सहित समाज के सभी तबके के लोग उपस्थित थे।

28 जनवरी को 'मन की बात' के 109वें एपिसोड में देश को सम्बोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने प्राण-प्रतिष्ठा के दिन भारतीयों के बीच प्रदर्शित सौहार्द और एकता की भावना की सराहना की। उन्होंने भारत के संविधान निर्माताओं को भी नमन किया, जिन्होंने आधुनिक भारतीय गणराज्य के आधार का मसौदा

तैयार करते समय भगवान राम के आदर्शों से प्रेरणा ली थी।

अयोध्या धाम स्थित राम जन्मभूमि मंदिर सांस्कृतिक कायाकल्प की भावना से इस सरकार द्वारा किए गए कई कार्यों का एक उदाहरण है। भारत सरकार 'तीर्थयात्रा कायाकल्प और आध्यात्मिक विरासत संवर्धन अभियान' (प्रसाद) योजना के तहत पर्यटन स्थलों पर बुनियादी ढाँचे के विकास के लिए राज्यों और केंद्रशासित प्रदेश प्रशासन को वित्तीय सहायता प्रदान करती है। 21 दिसम्बर, 2023 तक सरकार ने 1,600 करोड़ रुपये से अधिक लागत वाली करीब 46 परियोजनाओं को मंजूरी दी है। 26 नई साइटों में फैली इन परियोजनाओं की पहचान की गई है।

सांस्कृतिक और आर्थिक गतिविधियों का अंतर्सम्बंध प्रधानमंत्री के 'विकास भी विरासत भी' के आह्वान का आधार है, जिसका अर्थ है विकास के साथ-साथ विरासत भी। अयोध्या का कायाकल्प भी सामाजिक-आर्थिक क्षेत्रों तक फैला हुआ एक समग्र उपक्रम रहा है। प्रधानमंत्री द्वारा अयोध्या धाम में महर्षि वाल्मीकि अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे का उद्घाटन दिसम्बर, 2023 में किया गया था, जहाँ से जनवरी, 2024 में ही उड़ान संचालन शुरू हो गया। हवाई अड्डा प्राचीन शहर में एक अभूतपूर्व बुनियादी

विकास है और इसकी क्षमता सालाना 10 लाख यात्रियों को सम्भालने की होगी।

पुनर्विकसित रेलवे स्टेशन का नाम बदलकर अयोध्या धाम रेलवे स्टेशन रखा गया है। यह रेलवे स्टेशन इस नगरी में कनेक्टिविटी के परिवर्तन में एक और महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। वंदे भारत ट्रेनें पहले से ही काशी, कटरा, उज्जैन, पुष्कर, तिरुपति, शिरडी, अमृतसर और मदुरै को जोड़ती हैं। इसके अलावा हाल ही में एक नई ट्रेन श्रृंखला 'अमृत भारत' को भी हरी झंडी दिखाई गई, जिसमें पहली अमृत भारत ट्रेन अयोध्या से होकर गुजरेगी।

राम जन्मभूमि मंदिर के कारण ही इस क्षेत्र में आर्थिक गतिविधियों में वृद्धि हुई है। केवल एक वर्ष की अवधि में, 2021-22 से 2022-23 तक, विभिन्न क्षेत्रों में अयोध्या का निर्यात 130 प्रतिशत की तीव्र वृद्धि के बल पर 110 करोड़ रुपये से बढ़कर 254 करोड़ रुपये हो गया।

इससे पहले दिसम्बर, 2021 में प्रधानमंत्री ने काशी विश्वनाथ कॉरिडोर का भी उद्घाटन किया था, जो काशी विश्वनाथ मंदिर को गंगा के तट से जोड़ता है। तब से वाराणसी एक आर्थिक केंद्र बन गया है। एक स्वतंत्र सर्वेक्षण से पता चलता है कि अकेले 2022 में पवित्र शहर में पर्यटकों की संख्या में आठ गुना वृद्धि देखी गई है। मात्र 85 लाख पर्यटकों की तुलना में 7.2 करोड़ पर्यटक काशी आए। सर्वेक्षण में काशी के पर्यटन क्षेत्र से जुड़े रोजगार में 34 प्रतिशत की वृद्धि भी दर्ज की गई।

काशी विश्वनाथ कॉरिडोर के बाद केंद्र सरकार ने अक्तूबर, 2022 में उज्जैन में महाकालेश्वर मंदिर परिसर के पुनरुद्धार की योजना का भी लोकार्पण किया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कायाकल्प योजना के पहले चरण का उद्घाटन किया। इस परियोजना के माध्यम से लगभग 1.4 लाख आजीविका के अवसर पैदा हुए और कई स्थानीय कलाकारों और मजदूरों को रोज़गार मिला है। अनुमान है कि लगभग 350 कर्मचारी महाकाल लोक स्थल के संचालन और रखरखाव में शामिल होंगे। इसके साथ ही महाकालेश्वर मंदिर के अपशिष्ट अवशेषों को अगरबत्तियों और हर्बल रंगों में संसाधित करने के लिए मध्य प्रदेश सरकार ने एक संयंत्र भी स्थापित किया है। संयंत्र में 11 से अधिक कर्मचारी कार्यरत हैं, जिसका मासिक कारोबार 1.5 लाख रुपये है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार भारत की महान सांस्कृतिक विरासत को आधुनिक आर्थिक प्रणाली के कार्यात्मक तंत्र के साथ व्यावहारिक रूप से समन्वित करके एकीकृत करने के मिशन पर दृढ़ रही है। इस दृष्टिकोण ने हमारे देश के राष्ट्रीय आख्यान में सांस्कृतिक विरासत स्थलों के महत्त्व की धारणा में पूरी तरह से बदलाव ला दिया है। अन्य उदाहरणों में नए राजमार्गों का निर्माण करके चार धाम यात्रा तीर्थ स्थलों की परस्पर कनेक्टिविटी को पुनर्जीवित करना, गुरुद्वारा हरमंदिर और अन्य सिख तीर्थ स्थलों के आस-पास पर्यटन स्थलों और परस्पर जुड़ाव को विकसित करने के लिए 35,000 करोड़ रुपये का प्रावधान शामिल है। नवम्बर, 2019 में करतारपुर कॉरिडोर का उद्घाटन किया गया, जो भक्तों की सुविधा में एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार ने वैश्विक स्तर पर सुधार अभियान भी चलाया है। केवल मई, 2023 तक 231 चोरी हुई प्राचीन धरोहरों को विभिन्न प्रत्यावर्तन विधियों के माध्यम से भारत वापस लाया गया। सांस्कृतिक सुधार की यह प्रवृत्ति हमारे समृद्ध इतिहास को महत्त्व देने और उस प्राचीन ज्ञान को आगे बढ़ाने की शुरुआत है।

महाकाल लोक

काशी विश्वनाथ मंदिर

राम के आदर्शों को साकार करते राष्ट्र की परिकल्पना

चम्पत राय
महासचिव, श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट

22 जनवरी, 2024 को रामलला की प्राण-प्रतिष्ठा का पावन अनुष्ठान समारोह चल रहा था। यह एक अविस्मरणीय क्षण था। लगभग आधी सहस्राब्दी के बाद अपनी जन्मभूमि पर भगवान राम की वापसी हो रही थी। रामलला अपने राज्य के सिंहासन पर अधिकारपूर्वक विराजमान हो रहे थे। रामलला की मूर्ति में प्राणशक्ति का संचार होते ही अयोध्या नगरी और सम्पूर्ण भारत धन्य हो गया। राम जन्मभूमि मंदिर के निर्माण से भारत के इतिहास में एक ऐतिहासिक क्षण का आगमन हुआ। भारत के प्रमुख आध्यात्मिक केंद्रों में से एक के रूप में अयोध्या का पुनरुद्धार हो रहा था। इस ऐतिहासिक क्षण का उत्सव मनाने के लिए सभी भारतीय एकजुट थे। भगवान राम को समर्पित ध्वज ऊँची इमारतों पर और कारों की खिड़कियों पर लहराते हुए देखे गए। पूरा देश महान शासक की वापसी का जश्न मनाने के लिए एकजुट था।

अयोध्या भारत के प्राचीन शहरों में से एक है। इसका एक पुरातन इतिहास रहा है। गुप्त शासकों के दौरान राजनीतिक दृष्टिकोण से इसका परचम लहरा रहा था। कुमारगुप्त और स्कंदगुप्त के शासनकाल के दौरान साम्राज्य की राजधानी पाटलिपुत्र (पटना) से अयोध्या स्थानांतरित कर दी गई। इसका पुराना नाम साकेत था, जिसे बदलकर अयोध्या कर दिया गया। तब से लेकर सदियों तक इस पवित्र नगरी ने अनेक साम्राज्यों के उत्थान और पतन को करीब से देखा। भारत की स्वतंत्रता और आधुनिक भारत गणराज्य के जन्म की भी साक्षी बनी। अयोध्या का आध्यात्मिक लगाव सिर्फ हिन्दू धर्म से ही नहीं, बल्कि अन्य धर्मों से भी है। जैन धर्मग्रंथों का मानना है कि यह नगरी उनके पाँच 'तीर्थंकरों' का जन्मस्थान है। बौद्ध धर्मावलम्बियों के अनुसार गौतम बुद्ध ने वहाँ उपदेश दिया था।

सर्वोच्च न्यायालय ने राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट की स्थापना को लेकर अपना निर्णय दिया। सर्वोच्च न्यायालय के इस फैसले के बाद भारत सरकार ने केवल 1 रुपये की मामूली राशि का दान दिया। किसी भी राज्य की ओर से इसके निर्माण में कोई योगदान नहीं दिया गया था। सीधे तौर पर जनभागीदारी का उत्साह देखा गया। राम जन्मभूमि मंदिर के निर्माण के लिए कम-से-कम दस करोड़ भारतीय आगे आए। यह राहत, खुशी और एक महान कार्य को पूरा करने के संतोष की अंतर्निहित भावना का एक प्रमाण है और पूरा देश इसका अनुभव कर रहा है।

राम जन्मभूमि मंदिर की वास्तुकला नागर शैली से प्रेरित है। मंदिर परिसर 2.7 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है, जबकि कुल निर्मित क्षेत्र 57,400 वर्ग फीट है। इसमें तीन मंजिलें, 160 स्तंभ और 12 द्वार हैं। नागर प्रारम्भिक मध्यकालीन युग की वास्तुकला की एक शैली है। मंदिर एक ऊँचे मंच पर बनाया गया है, जिसमें गर्भगृह है। गर्भगृह में ऊँचे 'शिखर' के ठीक नीचे राम लला विराजमान हैं। राम जन्मभूमि मंदिर देश में एक महान कार्य के पूरा होने की अभिव्यक्ति का प्रतीक है।

श्री राम दरबार पहली मंजिल पर होगा। पूजा-अर्चना के विभिन्न प्रयोजनों के लिए पाँच मंडप होंगे। ये मंडप हैं– रंग मंडप, नृत्य मंडप, कीर्तन मंडप, सभा मंडप और प्रार्थना मंडप। खम्भों और दीवारों पर देवताओं की मूर्तियाँ सजी होंगी। मंदिर परिसर के चारों कोनों पर शिव, सूर्य, गणेश और भगवती को समर्पित मंदिर होंगे। वास्तव में यह एक ऐतिहासिक क्षण है। भारतीयों की यह पीढ़ी लगभग 500 वर्षों के बाद ईंट और गारे से बने राम मंदिर को देखने वाली पहली पीढ़ी है।

प्रधानमंत्री ने अपने 'मन की बात' सम्बोधन में भारत की मौलिक विचारधारा और हमारे मौलिक अधिकारों के माध्यम से न्याय और स्वतंत्रता को सुनिश्चित करने की प्रतिबद्धता पर जोर देते हुए बताया कि कैसे हमारे संविधान निर्माता भगवान राम के आदर्शों से प्रेरित थे। जैसे आत्मा के बिना शरीर अधूरा है और उसी प्रकार, हर भारतीय की आत्मा में बसने वाले भगवान राम को आज आखिरकार अपने अस्तित्व की हर मायने में सम्पूर्णता के एक साकार स्वरूप की अभिव्यक्ति मिल गई है। अंत में आशा है कि भारत के हर दृष्टि से परिपूर्ण प्राणी और उनके आदर्शों को आत्मसात करने की भावना 'राम से राष्ट्र' के स्वरूप में साकार होगी।

जीवन शक्ति के लिए मूर्ति की रचना

प्राण-प्रतिष्ठा समारोह और राम मंदिर की भव्यता के बीच, इस अवसर के सबसे महत्त्वपूर्ण तत्व – राम लला की मूर्ति – के बारे में बात न करना भूल होगी। यह मूर्ति भगवान राम की है, जो पाँच साल की उम्र के उनके स्वरूप का प्रकटीकरण है।

प्राचीन चट्टान पर भगवान राम की आकृति को परिभाषित करने के लिए भारत के सबसे सर्वाधिक लोकप्रिय मूर्तिकारों में से एक अरुण योगीराज को चुना गया था। उन्होंने ही नेताजी सुभाष चंद्र बोस की 28 फीट ऊँची प्रतिमा बनाई थी, जो इंडिया गेट के पास छत्र के नीचे है। हमारी दूरदर्शन टीम ने श्री योगीराज से बात की।

"मैं बहुत भाग्यशाली महसूस करता हूँ कि मुझे अयोध्या के लिए राम लला की मूर्ति बनाने का मौका मिला। यह क्रिया अप्रैल के महीने में शुरू हुई और मूर्ति को तराशने के लिए तीन कलाकारों का चयन किया गया। यह एक बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी थी, क्योंकि हम भारतीय पिछले 500 वर्षों से इस ऐतिहासिक पल का इंतजार कर रहे थे। मेरे दादाजी, मेरे पिता, दोनों ने मुझसे एक बात कही कि मुझे अपने पूर्वजों का ज्ञान प्राप्त करना चाहिए और यह समझने के लिए अध्ययन करना चाहिए कि हमारे पूर्वजों ने क्या किया है। मैंने पूरे भारत में शिल्प शास्त्र, तपस्चियों और शैलियों के बारे में गहराई से अध्ययन करना शुरू कर दिया और मुझे बहुत गर्व महसूस हो रहा है कि मैंने वापस आकर इस पेशे को जारी रखने का फैसला किया। मेरे अनुसार राम केवल देव ही नहीं, मानवता के प्रतीक, प्रणेता, आदर्श प्रशासक और महान योद्धा भी हैं। हमें अपने युवाओं को इन आदर्शों पर चलना सिखाने के साथ-साथ, शांति के साथ देश में इन्हें देश में स्थापित भी करना है। राम राज्य का अर्थ है राष्ट्र का कल्याण और यह सभी भारतीयों के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है।"

अरुण योगीराज, मूर्तिकार

राम मंदिर के गर्भगृह के अंदर 51 इंच लम्बी राम लला की मूर्ति एक प्राचीन काली चट्टान से बनाई गई है। इसे कई अलग-अलग आभूषणों से सजाया और सँवारा गया है, जिनमें से प्रत्येक का अलग-अलग महत्त्व है। गर्भ गृह में ऊँचे शिखर के ठीक नीचे राम लला खड़े हैं। आइए जानते हैं रामलला की मूर्ति के कुछ प्रमुख श्रृंगारों के बारे में।

मुकुट

रामलला के सिर पर मुकुट उत्तर भारतीय परम्परा के अनुसार तैयार किया गया है। मुकुट के केंद्र में सूर्य देव का प्रतीक है, जबकि दाहिनी ओर मोतियों की एक माला को फिलीग्रीस के जटिल कार्यों के साथ बुना गया है।

कुंडल

कुंडल मुकुट की संगत के लिए डिज़ाइन किया गया है। कुंडल को मोर की थीम से सजाया गया है और इसे माणिक, पन्ना, हीरे तथा सोने जैसे कीमती पत्थरों से सजाया गया है।

पदिका

पदिका गले के नीचे और नाभि के ऊपर पहना जाने वाला एक आभूषण है। इसे दैवीय श्रृंगार का महत्त्वपूर्ण अलंकरण माना जाता है। यह हीरे, पन्ने और एक अलंकृत पदक से बना पाँच लड़ियों वाला आभूषण है।

करधनी

राम लला की कमर को सोने से बने रत्न जड़ित कमरबन्द से सजाया गया है और हीरे, माणिक तथा मोती जैसे अन्य कीमती रत्नों से सजाया गया है।

बाधाओं को तोड़ती महिला शक्ति की चमक

गणतंत्र दिवस परेड 2024

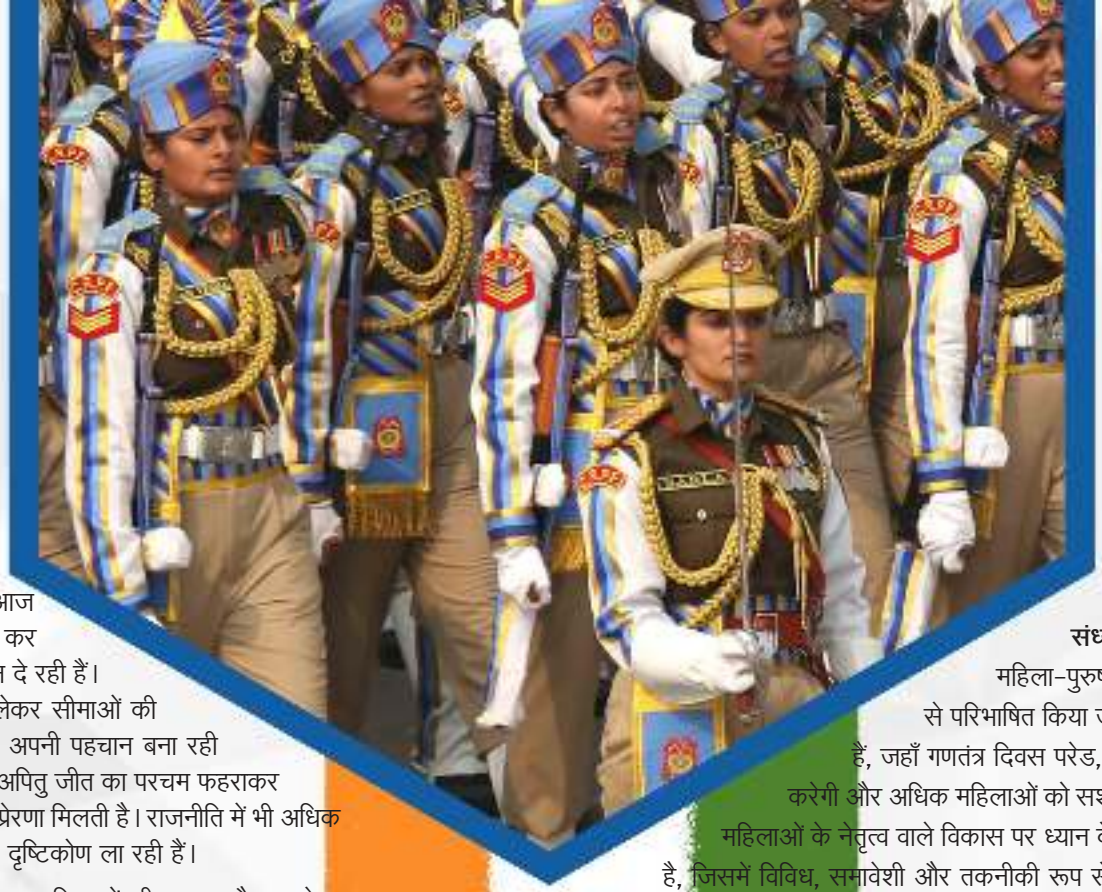

2047 तक 'विकसित भारत' के लक्ष्य के साथ आज के जीवंत भारत में महिलाएँ हर क्षेत्र में नेतृत्व कर रही हैं और देश के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। वे खेल और राजनीति में उत्कृष्ट प्रदर्शन से लेकर सीमाओं की सुरक्षा और चंद्रयान जैसे मिशन में भाग लेकर अपनी पहचान बना रही हैं। खेलों में वे न केवल प्रतिस्पर्धात्मक रहती हैं अपितु जीत का परचम फहराकर उच्चतम स्तर पर पहुँचती हैं, जिससे पीढ़ियों को प्रेरणा मिलती है। राजनीति में भी अधिक महिलाएँ सक्रिय रूप से भाग ले रही हैं और नए दृष्टिकोण ला रही हैं।

गणतंत्र दिवस परेड 2024 में 11 टुकड़ियों के साथ महिलाओं की ताकत और उनके असाधारण योगदान का प्रदर्शन किया गया, विशेष रूप से झाँकी जुलूस में शामिल महिला कलाकारों ने परिवर्तन की कहानी प्रस्तुत की। महिला बैंड से लेकर सांस्कृतिक कार्यक्रमों तक, यह प्रस्तुति एक ऐतिहासिक मील का पत्थर साबित हुई, जिसमें राष्ट्र के जीवंत सांस्कृतिक ताने-बाने में योगदान दे रही महिला शक्ति और उसकी विविध प्रतिभाओं का प्रदर्शन किया गया। 21वीं सदी में भारत ने महिला नेतृत्व वाले विकास को अपनाया, गणतंत्र दिवस उत्सव के दौरान महिलाओं की ताकत का उल्लेखनीय प्रदर्शन इसका उदाहरण है। DRDO की झाँकी ने राष्ट्र की सुरक्षा में उनकी बहुमुखी भूमिका पर प्रकाश डाला। विशेष रूप से **कैप्टन संध्या** के नेतृत्व में सर्व-महिला त्रि-सेवा दल ने पहली बार कर्तव्य पथ पर मार्च किया, जिसमें **कैप्टन शरण्याराव**, **सब लेफ्टिनेंट अंशू यादव** और **फ्लाइट लेफ्टिनेंट सृष्टि राव** भी शामिल हुईं। **मेजर सृष्टि खुल्लर** के नेतृत्व में एक अन्य महिला सशस्त्र बल चिकित्सा सेवा दल में **कैप्टन अम्बा सामंत, सर्जन लेफ्टिनेंट कंचना** और **फ्लाइट लेफ्टिनेंट दिव्याप्रिया** शामिल थीं, जिन्होंने भारत के सशस्त्र बलों में महिलाओं की सामूहिक ताकत और नेतृत्व का प्रदर्शन किया।

कैप्टन संध्या ने 2024 में गणतंत्र दिवस परेड में पहली बार त्रि-सेवा दल का नेतृत्व किया। वह गणतंत्र दिवस परेड के दौरान अभूतपूर्व महिला त्रि-सेवा दल का नेतृत्व करने के लिए बहुत आभार व्यक्त करती हैं, इसे सीखने और टीमवर्क द्वारा चिह्नित एक उल्लेखनीय तथा अविस्मरणीय अनुभव मानती हैं। वह परेड में 20 में से 11 महिला टुकड़ियों को शामिल करके पेश की गई प्रगतिशील छवि को रेखांकित करती हैं, जिसमें महिला-पुरुष समानता के प्रति भारत की प्रतिबद्धता और सशस्त्र बलों में महिलाओं के अमूल्य योगदान की मान्यता को प्रदर्शित किया गया। **कैप्टन संध्या** इस बात पर प्रकाश डालती हैं कि नेतृत्व को महिला-पुरुष में भेदभाव किए बिना योग्यता और समर्पण से परिभाषित किया जाता है। वे एक ऐसे भविष्य की कल्पना करती हैं, जहाँ गणतंत्र दिवस परेड, रक्षा में महिलाओं की उपलब्धियों का प्रदर्शन करेगी और अधिक महिलाओं को सशस्त्र बलों में शामिल होने के लिए प्रेरित करेगी। महिलाओं के नेतृत्व वाले विकास पर ध्यान केंद्रित करना एक महत्त्वपूर्ण बदलाव का प्रतीक है, जिसमें विविध, समावेशी और तकनीकी रूप से उन्नत सशस्त्र बलों की कल्पना की गई है, जहाँ महिलाएँ राष्ट्रीय सुरक्षा नीतियाँ और रणनीतियाँ बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

उत्तरी कश्मीर के उरी के एक दूरदराज के गाँव से आने वाली जम्मू-कश्मीर नौसेना यूनिट एनसीसी की **वरिष्ठ कैडेट कैप्टन उल्फत ख़ान**, अपने पिता के नक्शे-कदम पर चलने और रक्षा बलों में शामिल होकर देश की सेवा करने की इच्छा रखती हैं। उन्होंने 21 साल की उम्र में गणतंत्र दिवस शिविर के दौरान प्रधानमंत्री की रैली में परेड कमांडर के रूप में चुनी गई पहली महिला कैडेट के रूप में इतिहास रचा और अपने प्रदेश के लिए प्रशंसा अर्जित की। राष्ट्रीय कैडेट कोर (एनसीसी) का हिस्सा होने के नाते, गणतंत्र दिवस शिविर के दौरान उल्फत के असाधारण प्रदर्शन ने उन्हें 'सर्वश्रेष्ठ कमांडर' और 'डीजी कमेंडेशन मेडल सर्टिफिकेट' का प्रतिष्ठित खिताब दिलाया, जो उनके नेतृत्व गुणों और सेवा के प्रति समर्पण को उजागर करता है। सुदूर पृष्ठभूमि से राष्ट्रीय उपलब्धि हासिल करने तक उल्फत की यात्रा उनके दृढ़ संकल्प और उनके परिवर्तनकारी होने का प्रमाण है।

राष्ट्र का गौरव

अर्जुन पुरस्कार विजेता बेटियों से प्रेरित होंगी पीढ़ियाँ

महिला शक्ति एक सशक्त ताकत के रूप में उभरी है, जो बाधाओं को तोड़ रही है और खेल सहित विभिन्न क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ हासिल कर रही है। हाल के वर्षों में महिला एथलीट नए रिकॉर्ड बना कर सामाजिक मानदंडों को चुनौती दे रही हैं, यह साबित करते हुए कि वे पुरुषों की तरह ही सक्षम और प्रतिभाशाली हैं। विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं द्वारा प्रदर्शित दृढ़ संकल्प और सशक्तता ने रूढ़िवादिता को तोड़ दिया है, जिससे अधिक समावेशी और समानता पर आधारित समाज का मार्ग प्रशस्त हुआ है।

हाल ही में राष्ट्रपति भवन में आयोजित अर्जुन पुरस्कार समारोह खेल के क्षेत्र में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी का एक उल्लेखनीय प्रमाण है। इस समारोह में 13 उत्कृष्ट महिला एथलीट्स की उपलब्धियों का जश्न मनाया गया, जिन्होंने अपने-अपने क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। इन एथलीट्स ने वैश्विक मंच पर अद्वितीय समर्पण और कौशल का प्रदर्शन करते हुए शारीरिक और आर्थिक चुनौतियों पर काबू पाया है। प्रतिष्ठित अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित होना न केवल उनकी उपलब्धियों को प्रोत्साहित करता है, बल्कि खेल की दुनिया में महिलाओं की सामूहिक जीत का भी प्रतीक है।

"एक महिला के तौर पर यह पुरस्कार पाना बेहद गर्व की बात है। तीरंदाजी में मेरी यात्रा आर्थिक रूप से चुनौतीपूर्ण रही है। मेरे माता-पिता और कोच मेरे समर्थन के अटूट स्तम्भ रहे हैं। यह संतुष्टिदायक है कि अन्य लोग मेरे अनुभवों से सीख सकते हैं और हमारे देश की सफलता में योगदान दे सकते हैं। सरकार खेलों में महिलाओं का समर्थन करती है। छोटे गाँवों की प्रतिभाशाली लड़कियों के लिए अतिरिक्त वित्तीय सहायता और मंच उन्हें आगे बढ़ने और हमारे देश की सफलता में महत्त्वपूर्ण योगदान देने के लिए सशक्त बनाएँगे।"

-अदिति गोपीचंद स्वामी (तीरंदाजी)

"अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित होना मेरे जीवन भर के सपने को पूरा करता है। दो पैरा-एथलीट्स सहित 13 उल्लेखनीय महिलाओं के साथ जुड़ना एक बहुत बड़ा सम्मान है। मैं अपने पिता, पति और कोचों के अटूट समर्थन के लिए आभारी हूँ। माता-पिता से आग्रह है कि खेल में महिलाओं के लिए परिवार का समर्थन महत्त्वपूर्ण है और आर्थिक सहायता के साथ बेटियों के जुनून को पोषित करना भी आवश्यक है। उनके प्रयोजन में सहायता आवश्यक है। मैं खेलों में महिलाओं की बेहतरी और देश भर में युवा लड़कियों को प्रेरित करने के लिए प्रयास जारी रखने के लिए प्रतिबद्ध हूँ।"

- प्राची यादव (पैरा कैनोइंग)

"एक महिला के रूप में अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित होना एक भावनात्मक और महत्त्वपूर्ण क्षण है, जो मुझे एक नई पहचान देता है और महिला एथलीट्स की बढ़ती भागीदारी का प्रतीक है। लॉन बॉल में मेरी यात्रा बलिदानों और चुनौतियों से भरी रही है, लेकिन मेरा परिवार प्रेरणा स्रोत रहा है। यह सम्मान लॉन बॉल पर प्रकाश डालने और खेल में अधिक रुचि को प्रोत्साहित करने का एक अवसर है। मैं खेलो इंडिया जैसी पहल और खेल विकास में प्रधानमंत्री के योगदान के लिए आभारी हूँ। मेरे जैसे एथलीट्स के उत्थान और समर्थन के लिए धन्यवाद।"

- पिंकी सिंह (लॉन बाउल्स)

"अपनी पूरी यात्रा के दौरान, मैंने हार न मानने और ईमानदारी के साथ अपने काम पर ध्यान केंद्रित करने का फॉर्मूला अपनाया। जब समस्याओं का सामना करना पड़े, तो उनका डटकर सामना करना और हार न मानना महत्त्वपूर्ण है। 17 साल तक कबड्डी खेलने के बाद अर्जुन पुरस्कार हासिल करना, ऐसा लगता है एक सपना सच हो गया। मैं विभिन्न पहलों के लिए सरकार, हमारे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और खेल मंत्री अनुराग सिंह ठाकुर का हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ, जो खेलों में युवाओं की एक नई पीढ़ी का पोषण कर रहे हैं।"

- रितु नेगी (कबड्डी)

भारत में महिला सशक्तिकरण

मार्ग प्रशस्त करते स्वयं सहायता समूह

भारत के उभरते परिदृश्य में महिलाएँ विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति कर रही हैं, अपनी शक्ति का प्रदर्शन कर रही हैं और देश की प्रगति में महत्त्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। ऐसा ही एक क्षेत्र स्वयं सहायता समूह का है, जिसमें महिलाएँ अपनी अमिट छाप छोड़ रही हैं। देश में महिला स्वयं सहायता समूहों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है। इससे पता चलता है कि महिला सशक्तिकरण और आत्मनिर्भरता की दिशा में सकारात्मक बदलाव हो रहा है।

इस सशक्तिकरण का एक उल्लेखनीय उदाहरण निबिया बेग़मपुर गाँव में देखा जा सकता है, जहाँ स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी महिलाओं ने 'उन्नति जैविक इकाई' नाम से एक संगठन शुरू किया है। ये महिलाएँ स्थानीय रूप से प्राप्त सामग्री का उपयोग करके जैव-उर्वरक और जैव-कीटनाशक तैयार करने में सक्रिय रूप से शामिल हैं। इस प्रक्रिया में जैव-उर्वरक बनाने के लिए गाय के गोबर, नीम की पत्तियों और विभिन्न औषधीय पौधों को मिलाना शामिल है।

इस सामूहिक प्रयास से न केवल एक सफल संगठन का निर्माण हुआ है, बल्कि यह इससे जुड़ी महिलाओं के आर्थिक उत्थान का जरिया भी बन गया है। उनके द्वारा उत्पादित जैव-उत्पादों की माँग लगातार बढ़ रही है, आस-पास के गाँवों के छह हज़ार से अधिक किसान ये वस्तुएँ खरीद रहे हैं। परिणामस्वरूप स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी महिलाओं की वित्तीय स्थिति में सुधार आया है जो महिलाओं की स्वतंत्रता और संगठन पर इस तरह की पहल के प्रभाव को दर्शाता है।

"मैं निबिया बेग़मपुर में 10 महिलाओं के साथ एक स्वयं सहायता समूह की सदस्य हूँ। हमारे समूह ने उर्वरक, विकासवर्धक, संरक्षक और जीवामृत कृषि अपशिष्टों से जैविक उत्पाद तैयार करके लगभग 6,000 किसानों के खेतों की मिट्टी की उर्वरता में उल्लेखनीय सुधार किया है। मैं अनपढ़ होने के बावजूद मार्गदर्शक के रूप में अपने समूह की सदस्यों की आय और खेतों की मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने में सक्रिय रूप से योगदान देती हूँ। अपनी साथी महिलाओं के साथ हम प्रभावी जैव उर्वरक और जैविक खाद बनाने के लिए गोबर, नीम और गोमूत्र जैसे विभिन्न कार्बनिक पदार्थों का उपयोग करने पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

हमारा गौरव, 'मृदासंजीवनी', तीन फुट का एक गड्ढा है, जो 60 किलोग्राम गाय के गोबर, मिट्टी, बोरवेल गाद और थोड़े से चूने से भरा हुआ है। 90 दिनों तक हर 30 दिनों में मिश्रण को परिश्रमपूर्वक पलटने से हम प्रभावी जैविक उर्वरक बनाते हैं। शुद्ध गाय के गोबर से बनी यह जीवन रेखा मिट्टी की उर्वरता को काफी बढ़ाती है। इसके अलावा हम गोमूत्र इकट्ठा करते हैं, इसे हर्बल अर्क के साथ मिलाते हैं और 90 दिनों में इस मिश्रण को सावधानीपूर्वक तैयार करते हैं। पैक किया हुआ और उपयोग के लिए तैयार अंतिम उत्पाद रासायनिक उर्वरकों का एक स्थायी विकल्प प्रदान करता है।

मुझे सच में गर्व है कि हमारे कार्य से समृद्ध और कम सुविधा प्राप्त किसानों, दोनों को लाभ होता है, क्योंकि हमने जैविक खेती के सकारात्मक प्रभाव को सफलतापूर्वक प्रदर्शित किया है। हमारी पद्धति न केवल फसलों की पैदावार बढ़ाती है, बल्कि एक स्वस्थ और अधिक टिकाऊ वातावरण भी सुनिश्चित करती है। अपने समूह के सदस्यों के साथ मिलकर हमने अपने समुदाय के लिए मूल्यवान उत्पाद बनाने के लिए अपने घरों और खेतों से अपशिष्ट पदार्थों का उपयोग करके अपनी आर्थिक स्थिति को बदल दिया है।"

- राम प्यारी, स्वयं सहायता समूह की सदस्य, निबिया बेग़मपुर गाँव

पीपुल्स पद्म

उत्कृष्टता और निःस्वार्थ सेवा को सम्मान

विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्टता और असाधारण योगदान का जश्न मनाते हुए 2024 पद्म पुरस्कारों ने उन व्यक्तियों को सम्मानित किया है, जिनके अथक प्रयासों ने समाज पर एक अमिट छाप छोड़ी है। नामांकन की सिफारिश करने वाले चयनित व्यक्तियों की परम्परा से हटकर 2016 में पद्म पुरस्कार विजेताओं के नामांकन और चयन की पूरी प्रक्रिया को लोकतांत्रिक और पारदर्शी बनाया गया। एक गौरवशाली लोकतंत्र के सर्वोच्च नागरिक सम्मान पद्म पुरस्कारों को पीपुल्स पद्म में बदलकर सरकार मान्यता दे रही है आम नागरिकों की असाधारण उपलब्धियों, संस्कृतियों, कौशल, विचारों और कार्यों को।

अपनी 109वीं 'मन की बात' में प्रधानमंत्री ने निःस्वार्थ सेवा की परिवर्तनकारी शक्ति पर प्रकाश डाला। उन्होंने पद्म पुरस्कार विजेताओं की सराहना की, जिनके उल्लेखनीय योगदान ने पूरे देश में सकारात्मक बदलाव की लहर पैदा की है। आइए सुनते हैं कुछ पुरस्कार विजेताओं का क्या कहना है।

"इस पुरस्कार हेतु मुझे चुनने के लिए मैं केंद्र और राज्य सरकारों को धन्यवाद देना चाहती हूँ। मैं बचपन से ही हाथियों से जुड़ी रही हूँ, हमारे शिविरों में हाथी थे, जिन्हें प्रशिक्षित किया गया था। मैं महावतों को देखती थी कि वे हाथियों को कैसे प्रशिक्षित करते हैं। मैंने अपने पिता, हाथी विशेषज्ञ और अपने गुरु प्रकृतिश चंद्र बरुआ से पूछा कि क्या मैं हाथियों को प्रशिक्षित कर सकती हूँ, क्योंकि यह एक पुरुष-प्रधान पेशा है। उन्होंने कहा कि अगर आपमें इच्छाशक्ति है तो आप निश्चित रूप से ऐसा कर सकते हैं और इस तरह मैंने प्रशिक्षण शुरू किया। मेरे पिता ने कहा कि तुम्हें हाथियों को अपने बच्चों की तरह प्यार करना होगा, क्योंकि वे बहुत बुद्धिमान होते हैं और वे हमारी भावनाओं को समझ सकते हैं। इसलिए मैंने उनके मनोविज्ञान का भी अध्ययन किया।"

पारबती बरुआ, पद्मश्री पाने वाली पहली महिला महावत

"मैंने एक कलाकार बनने के लिए बहुत मेहनत की है। इतने सालों तक किसी ने मेरे बारे में नहीं सोचा, लेकिन अब भारत सरकार ने मुझे पद्मश्री से सम्मानित किया है। इस सम्मान के लिए चुने जाने पर मैं बेहद खुश और उत्साहित हूँ। मैं तब से गा रहा हूँ, जब मैं 10 साल का था। पहले मेरे क्षेत्र में ऐसे संगीत की बहुत माँग थी। वह अब कम हो गई है, लेकिन मैंने अब भी अपनी कला को कायम रखा है।"

रतन कहार, पद्मश्री, भादु लोक गायक और लेखक, अपनी रचना 'बोरो लोकेर बिटी लो' से लोगों का ध्यान आकर्षित किया

"मैं 12 साल की उम्र से पेड़ लगा रहा हूँ। फिलहाल, मेरे घर के बाहर 5,000 से 6,000 पेड़ लगे हैं। मैं बाकियों की गिनती भी नहीं कर सकता, मैंने लोगों के घरों के सामने ढेर सारे पेड़ लगाए हैं। मैंने बहुत सारे नीम और हर तरह के पेड़ लगाए हैं। मैंने अपना पूरा जीवन पेड़ों के बीच बिताया है। मुझे पद्मश्री पुरस्कार जीतने की उम्मीद नहीं थी। आज मैं बहुत खुश हूँ। मुझे बहुत अच्छा महसूस हो रहा है।"

दुखू माझी, पद्मश्री पर्यावरणविद्, जिन्होंने पेड़ लगाने के लिए 5 दशक समर्पित किए

"पद्म पुरस्कार पाना मेरे लिए सम्मान की बात है। मैं श्री सर्वराय गुरुकुलम के प्रति अपना आभार व्यक्त करती हूँ जहाँ महिलाओं को इस कला में प्रशिक्षित किया गया। एक महान जोड़े ने हरिकथा की कला का प्रशिक्षण देने के लिए इस संस्थान की स्थापना की थी। उन्होंने मुझे यह कला सीखने और संस्था में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित किया। मैंने अपना पहला प्रदर्शन गौरी कल्याणम पर दिया। मैंने रामायण पर 15 भागों में हरिकथा करना सीखा। मैंने देश के लगभग सभी विश्वविद्यालयों में संस्कृत में हरिकथा प्रस्तुत की है। हार्वर्ड यूनिवर्सिटी ने भी मुझे अपने सम्मेलन के लिए आमंत्रित किया।"

उमा माहेश्वरी डी., पद्मश्री, संस्कृत में प्रदर्शन करने वाली पहली महिला हरिकथा कलाकार

"जनजातियों के बीच मैंने 1980 से उनके विकास के लिए, आत्मनिर्भर बनाने के लिए और समाज की मुख्यधारा में जोड़ने हेतु काम किया। पहले की स्थिति बहुत दुखदाई थी। अब मेरे प्रयास और प्रशासन की मदद से इन जनजातियों की स्थिति में काफ़ी सुधार हुआ है। नौकरी भी मिल रही है और आगे बढ़ने के लिए एक उत्सुकता जागृत हुई है। पद्मश्री से सम्मानित होकर मुझे बहुत अच्छा महसूस हो रहा है।"

जागेश्वर यादव, पद्मश्री, बिरहोर और कोरवा की पीवीटीजी जनजातियों के उत्थान में कार्यरत

पारम्परिक भारतीय चिकित्सा का आधुनिकीकरण

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'मन की बात' के 109वें सम्बोधन में पारम्परिक भारतीय चिकित्सा प्रणालियों की समृद्ध विरासत के बारे में राष्ट्र को सम्बोधित किया।

> मुझे ये बताते हुए ख़ुशी हो रही है कि आयुष मंत्रालय ने आयुर्वेद, सिद्ध और यूनानी चिकित्सा से जुड़े डाटा और शब्दावली का वर्गीकरण किया है, इसमें विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भी मदद की है। दोनों के प्रयासों से आयुर्वेद, यूनानी और सिद्ध चिकित्सा में बीमारी और इलाज से जुड़ी शब्दावली की कोडिंग कर दी गई है। इस कोडिंग की मदद से अब सभी डॉक्टर अपनी प्रिसक्रिप्शन या पर्ची एक समान भाषा में लिखेंगे। रिसर्च बढ़ने और कई वैज्ञानिकों के साथ-साथ जुड़ने से ये चिकित्सा पद्धतियाँ और बेहतर परिणाम देंगी और लोगों का इनके प्रति झुकाव बढ़ेगा।

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने अपने ICD-11, पारम्परिक चिकित्सा मॉड्यूल 2 में आयुर्वेद, यूनानी और सिद्ध चिकित्सा में एक कोड के रूप में अनुक्रमित करके रोगों को परिभाषित किया है। वैज्ञानिक शब्दावली को इंगित करने के लिए एक समान कोड के साथ पारम्परिक भारतीय चिकित्सा शब्दावली और रोगों का यह मानकीकरण पहली बार किया गया है। ICD यानी, रोगों का अंतरराष्ट्रीय वर्गीकरण, विश्व स्वास्थ्य संगठन के रोगों का अनुक्रम बनाने की प्रणाली है।

यह एकीकरण भारत की पारम्परिक स्वास्थ्य देखभाल प्रणालियों को वैश्विक स्वास्थ्य देखभाल और चिकित्सा प्रणाली के साथ जोड़कर कई उद्देश्यों को पूरा करेगा।

उपचार और निदान के भारत के प्राचीन ज्ञान को पुनर्जीवित करने और पारम्परिक चिकित्सा में अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार ने लगभग एक दशक पहले नवम्बर, 2014 में एक नया आयुष मंत्रालय गठित किया था।

यह सरकार भारतीय पारम्परिक चिकित्सा को वैश्विक मानचित्र पर लाने के लिए एक कदम आगे बढ़ी है। भारत की G20 अध्यक्षता के दौरान, आयुष मंत्रालय ने स्वास्थ्य कार्य समूह के सभी कार्यक्रमों में भाग लिया, जिसके कारण नई दिल्ली लीडर्स घोषणा में पारम्परिक चिकित्सा प्रणालियों को महत्त्व दिया गया, जिसने 'स्वास्थ्य में साक्ष्य-आधारित पारम्परिक और पूरक चिकित्सा की सम्भावित भूमिका' को मान्यता दी।

प्रधानमंत्री ने दो भारतीयों के बारे में चर्चा की, जो पारम्परिक औषधियों पर भरोसा करने के लिए नागरिकों के बीच विश्वास की भावना को बढ़ावा देने के लिए वर्षों से अथक प्रयास कर रहे हैं। अरुणाचल प्रदेश की यानुंग जामोह लैगो और छत्तीसगढ़ के हेमचंद मांझी को पारम्परिक भारतीय दवाओं में उनके काम के लिए जनवरी, 2024 में पद्मश्री दिया गया।

"मुझे सभी से स्नेह है। अपने देश के लिए, सभी पौधों के लिए, सभी जानवरों के लिए और इस भूमि के लिए मेरा प्यार है। मैं एक ऐसी व्यक्ति हूँ, जो प्रकृति से बहुत जुड़ी हुई है। इसलिए मैंने यह काम (पारम्परिक दवाओं का) किया, साथ ही मैं देख रही हूँ कि हमारे देश की दवाओं की पारम्परिक प्रणाली दिन-ब-दिन कम होती जा रही है। इसे पुनर्जीवित करना होगा। विदेशी प्रणालियों के लम्बे समय तक उपयोग ने हमें अपनी जड़ों से भटका दिया है, इसलिए हमें अपनी पारम्परिक ज्ञान प्रणालियों की जड़ों को मज़बूत बनाए रखना होगा। यह समाज के लिए भला करने की भावना है, देश प्रेम की भावना है, जिसने मुझे इस क्षेत्र में काम करने के लिए प्रेरित किया। इस पुरस्कार (पद्मश्री) का महत्त्व बहुत बड़ा है। मेरी पूरी मेहनत को देश के लिए एक महत्त्वपूर्ण योगदान के रूप में मान्यता दी गई है। मेरी कड़ी मेहनत को मंजूरी मिल गई है। इससे मुझे बहुत खुशी हुई है और मुझे और अधिक काम करते रहने की प्रेरणा मिली है।"

-यानुंग जामोह लैगो, अरुणाचल प्रदेश

"हम बहुत खुश हैं कि सरकार ने हमारे प्रयासों का संज्ञान लिया। हम धन्यवाद देते हैं। हमें ख़ुशी है कि हमें पुरस्कृत किया गया। हम नाड़ी देख के बीमारी का पता लगाते हैं और फिर जड़ी-बूटियाँ देते हैं। हम बहुत प्रकार का उपचार करते हैं। हम कैंसर, ब्लड कैंसर, मिर्गी, और एड्स की दवा देते हैं। देशभर से लोग हमारे पास आते हैं। हम ये काम 20 साल की उम्र से कर रहे हैं।"

-हेमचंद मांझी, छत्तीसगढ़

भारतीय पारम्परिक चिकित्सा पद्धतियाँ

आयुर्वेद

आयुर्वेद एक प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति है। इसकी शुरुआत भारत में 3 सहस्राब्दियों से भी अधिक समय पहले हुई। आयुर्वेद शब्द संस्कृत के शब्द 'आयुर' यानी जीवन और 'वेद' यानी विज्ञान या ज्ञान से मिलकर बना है। सार्वभौमिक अंतर्सम्बंध की अवधारणाएँ, शरीर के घटक तत्त्व, जिन्हें 'प्रकृति' कहा जाता है और मौलिक जीवन शक्तियाँ, जिन्हें 'दोष' कहा जाता है, आयुर्वेद का आधार हैं। आयुर्वेदिक उपचार का लक्ष्य रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाकर, तनाव और चिन्ता को कम और अशुद्धियों को दूर करके, शरीर और दिमाग के सामंजस्य को बढ़ाकर रोगी की मदद करना है। उपचार की इस पद्धति में जड़ी-बूटियों, पौधों, तेलों और कुछ मसालों का इस्तेमाल किया जाता है।

योग

योग मूलतः विज्ञान पर आधारित एक आध्यात्मिक विषय है, जो मन और शरीर में सामंजस्य स्थापित करने पर केंद्रित है। यह स्वस्थ जीवन जीने की एक कला और विज्ञान है। 'योग' शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत के मूल शब्द 'युज' से हुई है, जिसका अर्थ है 'जोड़ना' या युग्म या 'एकीकृत होना'। योगिक ग्रंथों के अनुसार योग के अभ्यास से व्यक्तिगत चेतना का सार्वभौमिक चेतना के साथ मिलन और तालमेल होता है, जो मन और शरीर तथा मानव और प्रकृति के बीच पूर्ण सामंजस्य का संकेत देता है। योग का प्राथमिक उद्देश्य जीवन के सभी क्षेत्रों में तारतम्यता स्थापित करना और स्वस्थ जीवन की स्थापना करना है। इसका उपयोग अक्सर आयुर्वेद में एक उपचार प्रणाली के रूप में किया जाता है।

सिद्ध

चिकित्सा की सिद्ध प्रणाली की उत्पत्ति भारत के दक्षिणी भाग से हुई है। यह दुनिया की सबसे पुरानी पारम्परिक चिकित्सा प्रणालियों में से एक है और यह न केवल शरीर का इलाज करती है, बल्कि मन और आत्मा के दायरे में भी प्रवेश करती है। सिद्ध शब्द की उत्पत्ति तमिल शब्द सिद्धि से हुई है, जिसका अर्थ है 'प्राप्त की जाने वाली वस्तु' या 'पूर्णता'। इस व्यवस्था की जड़ें प्राचीन तमिल सभ्यता से जुड़ी हुई हैं। सिद्ध में कच्ची औषधियों को उनकी उत्पत्ति के आधार पर निम्नलिखित श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है— पौधा आधारित (मूलिगाइवागुप्पु), पशु आधारित (सीवमवागुप्पु), धातु और खनिज आधारित (थथुवागुप्पु)।

यूनानी

यूनानी चिकित्सा प्रणाली सबसे पुरानी औषधीय उपचार प्रणालियों में से एक है, जो 460 ईसा पूर्व में हिप्पोक्रेट्स (चिकित्सा के जनक) की शिक्षाओं पर आधारित है। ऐसा कहा जाता है कि हिप्पोक्रेट्स ने चिकित्सा को अंधविश्वास, जादू और अल्केमी से मुक्त करके इसे विज्ञान की एक विशिष्ट शाखा के रूप में स्थापित किया था। यह एक व्यापक चिकित्सा प्रणाली है, जो शरीर की विभिन्न अवस्थाओं (स्वास्थ्य और रोग) से सम्बंधित है। यूनानी चिकित्सा प्रणाली में पुनर्वास, निवारक और उपचारात्मक स्वास्थ्य देखभाल प्रदान की जाती है। यूनानी की उत्पत्ति आयोनियन शब्द से हुई है, जो वर्तमान ग्रीस (यूनान) में इसकी शुरुआत का संकेत देता है। यूनानी का विकास अरब और फारसी भूमि में हुआ था और इसे लगभग 1,000 साल पहले अरबों द्वारा भारतीय उपमहाद्वीप में पेश किया गया था। भारत में यूनानी ने भारतीय चिकित्सा प्रणालियों में एकीकृत होकर अपना स्थाई निवास पाया। अब यह हमारी सभ्यतागत विरासत का अभिन्न अंग है।

अमृतकाल में वैश्विक स्वास्थ्य सेवाओं के लिए पारम्परिक चिकित्सा को मजबूत करता WHO ICD-11 TM मॉड्यूल 2

राजेश कोटेचा
सचिव, आयुष मंत्रालय

माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने 'मन की बात' कार्यक्रम के हालिया एपिसोड में रोगों के अंतरराष्ट्रीय वर्गीकरण (ICD-11) में मॉड्यूल-2 के रूप में आयुर्वेद, सिद्ध और यूनानी रुग्णता कोड को शामिल करने पर प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने स्पष्ट रूप से बताया कि कैसे एक आयुष चिकित्सक द्वारा डायग्नोस्टिक रिकॉर्ड के हिस्से के रूप में इस्तेमाल किया गया शब्द दुनिया भर में किसी भी व्यक्ति द्वारा ICD-11 प्लेटफॉर्म के माध्यम से समझा जाएगा। उन्होंने वैश्विक स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में भारत की महत्त्वपूर्ण सफलता के रूप में WHO ICD-11 TM मॉड्यूल 2 पहल की सराहना की। यहाँ यह याद दिलाना उचित होगा कि माननीय प्रधानमंत्री ने एक बार कहा था कि भारत की पारम्परिक चिकित्सा प्रणाली केवल उपचार तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह जीवन का एक समग्र विज्ञान है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के साथ भारत की साझेदारी पूरी मानवता की सेवा के लिए एक बड़ी जिम्मेदारी है। WHO ICD-11 TM मॉड्यूल-2 में पारम्परिक चिकित्सा (आयुर्वेद, सिद्ध और यूनानी), रोगों के नाम और डेटा के सफल समावेशन के साथ माननीय प्रधानमंत्री का कथन सच हो रहा है।

WHO ICD-11, अध्याय 26, TM मॉड्यूल-2, आयुष मंत्रालय के सहयोग से विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा किए गए बहुदेशीय हितधारक परामर्शी प्रयास का परिणाम है। राष्ट्रीय कार्यान्वयन के लिए ICD-11 TM चैप्टर मॉड्यूल-2 संस्करण 10 जनवरी, 2024 को जारी किया गया था। ICD-11 टीएम 2 मॉड्यूल में 'विकार सेक्शन' के तहत 529 आयुर्वेद, सिद्ध और यूनानी रोग कोड शामिल हैं, साथ ही एक सेक्शन के माध्यम से सिस्टम विशिष्ट ऑन्टोलॉजी 'पारम्परिक चिकित्सा पैटर्न' पर सुनिश्चित की जाती है।

देश में कार्यान्वयन की तैयारी के हिस्से के रूप में आयुष मंत्रालय ने सभी आयुष हितधारकों को चरणबद्ध तरीके से ICD-11 और TM मॉड्यूल-2 पेश करने के लिए राष्ट्रव्यापी जागरूकता कार्यक्रम शुरू किया है। विचार यह है कि पर्याप्त संख्या में प्रशिक्षक तैयार किए जाएँ और यह सुनिश्चित किया जाए कि वे ICD-11 को अपनाने और कार्यान्वयन के लिए केंद्र से लेकर राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों/ जिलों और स्थानीय निकायों तक सभी स्तरों पर काम करें। हितधारकों को शिक्षण सामग्री और क्षमता निर्माण कार्यक्रमों के माध्यम से प्रशिक्षित किया जाएगा। यह पहल राष्ट्रीय भारतीय चिकित्सा प्रणाली आयोग (एनसीआईएसएम), राष्ट्रीय होम्योपैथी आयोग (एनसीएच), आयुष अनुसंधान परिषदों और मंत्रालय के तहत राष्ट्रीय संस्थानों के विशेषज्ञों की टीमों द्वारा राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों के आयुष विभागों और सार्वजनिक तथा निजी क्षेत्रों के अन्य हितधारकों के समन्वय से की जाएगी। इसके अलावा, आयुष क्षेत्र में WHO-फैमिली ऑफ इंटरनेशनल क्लासिफिकेशन के प्रभावी अखिल भारतीय कार्यान्वयन के लिए भारत सरकार के स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय (DGHS) के तहत केंद्रीय स्वास्थ्य खुफिया ब्यूरो (CBHI), राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्राधिकरण (NHA) के आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन (ABDM) के साथ मेलजोल से राष्ट्रीय आयुष मिशन से मार्गदर्शन और सेवाएँ ली जाएँगी।

आयुष क्षेत्र में रुग्णता के लिए ICD-11 कोडिंग से सार्वजनिक और निजी बीमा निपटान प्रक्रिया को बदलने में मदद मिलेगी। यह आयुष क्षेत्र में बीमा स्वास्थ्य कवरेज की सुविधा प्रदान करेगा और भारत में मेडिकल वैल्यू ट्रैवल को काफी बढ़ावा देगा।

दुनिया की सबसे बड़ी सार्वजनिक स्वास्थ्य बीमा पहल–प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना के तहत आयुर्वेद पैकेज जोड़ने की प्रक्रिया अंतिम चरण में है। ICD TM 2 कोड पहले से ही इन पैकेजों की तैयारी के लिए उपयोग किए जा रहे हैं और ये इस दिशा में अवधारणा के प्रमाण के रूप में काम करेंगे। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त ये कोडिंग प्रणालियाँ आयुष प्रणालियों के लिए मजबूत डाटा संग्रह, अंतरराष्ट्रीय तुलनीयता और साक्ष्य निर्माण सुनिश्चित करने के लिए तैयार हैं। जैसा कि हमारे माननीय प्रधानमंत्री अपने वैश्विक बयानों में हमें समूची मानवता की सेवा करने की ज़िम्मेदारी की याद दिलाते हैं, उसी के अनुरूप आयुष मंत्रालय भविष्य की एकीकृत स्वास्थ्य सेवाओं और पारम्परिक चिकित्सा के महान अमृतकाल के अंतर्गत आयुष प्रणालियों के माध्यम से वैश्विक प्रभाव के साथ 'वोकल फॉर लोकल' के विचार का पालन करने के लिए प्रतिबद्ध है।

हमर हाथी–हमर गोठ

छत्तीसगढ़ में रेडियो की ताकत

छत्तीसगढ़ में एक अनूठा रेडियो कार्यक्रमः 'हमर हाथी–हमर गोठ' लगभग सात वर्षों से मनुष्यों और हाथियों, दोनों के जीवन को बदल रहा है। इस अभिनव उद्यम ने संरक्षण और सामुदायिक सशक्तिकरण के माध्यम के रूप में रेडियो की अविश्वसनीय शक्ति को प्रदर्शित किया है। आकाशवाणी के चार केंद्रों– अम्बिकापुर, रायपुर, बिलासपुर और रायगढ़ से हर शाम प्रसारित होने वाला 'हमर हाथी–हमर गोठ' छत्तीसगढ़ के दोहरे उद्देश्य को पूरा करता है— विशिष्ट वन क्षेत्रों में हाथियों के झुंड की उपस्थिति और आवाजाही की घोषणा करना और इस सौम्य विशालकाय जीव के बारे में आवश्यक जानकारी प्रदान करना। यह अभिनव वेंचर छत्तीसगढ़ के जंगलों में रहने वालों के लिए अपरिहार्य बन गया है, जिससे हाथियों से इनकाउंटर और सम्भावित क्षति के जोखिम कम हो गए हैं।

'हमर हाथी–हमर गोठ' तत्काल सुरक्षा व्यवस्थाओं के अलावा हाथियों की गतिविधियों के बारे में डाटा संग्रह में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। रेडियो की शक्ति का उपयोग करके, कार्यक्रम ने छत्तीसगढ़ में मनुष्यों और हाथियों के बीच सफलतापूर्वक सामंजस्यपूर्ण सम्बंध बनाया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'हमर हाथी–हमर गोठ' की सफलता की कहानी का उल्लेख अपने 'मन की बात' सम्बोधन में किया और इस पहल की प्रशंसा की । यह सम्मान सोशल मीडिया और इंटरनेट के प्रभुत्व वाले युग में रेडियो के स्थाई महत्त्व को बढ़ाता है। 'हमर हाथी–हमर गोठ' इस बात का जीवंत उदाहरण है कि रेडियो जैसा पारम्परिक माध्यम छत्तीसगढ़ के जंगलों में दूरियों को पाटने, समुदायों को जोड़ने और सबसे महत्त्वपूर्ण बात, जीवन बचाने का काम करता है।

"पहले मैं आकाशवाणी अम्बिकापुर में कार्यक्रम अधिकारी था, अब आकाशवाणी बिलासपुर में कार्यक्रम प्रमुख के रूप में कार्यरत हूँ। सात साल पहले हाथियों के बड़े खतरे का सामना कर रहे स्थानीय समुदायों और वन्यजीव संरक्षक के सहयोग से ऑल इंडिया रेडियो अम्बिकापुर में 'हमर हाथी–हमर गोठ' कार्यक्रम शुरू किया, जिसका विस्तार रायगढ़, रायपुर, राजनांदगाँव और बिलासपुर जैसे क्षेत्रों तक किया गया। 'मन की बात' में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा प्रशंसित कार्यक्रम 'हमर हाथी–हमर गोठ' हाथियों की गतिविधियों के बारे में जागरूकता पैदा करता है। यह कार्यक्रम, वन्यजीव संरक्षण में मूल्यवान माध्यम के रूप में खड़ा है, जो मनुष्यों और हाथियों के बीच सह-अस्तित्व को बढ़ावा देने में रेडियो की प्रभावशाली भूमिका को प्रदर्शित करता है।"

-महेंद्र कुमार साहू, आकाशवाणी बिलासपुर

"प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'मन की बात' में 'हमार हाथी–हमार गोठ' की चर्चा करते हुए न केवल इस कार्यक्रम पर प्रकाश डाला, बल्कि इसे जारी रखने के लिए प्रोत्साहित भी किया। उन्होंने सुझाव दिया कि जागरूकता पैदा करने और लोगों को नुकसान से बचाने के लिए ऐसे कार्यक्रमों का अन्य क्षेत्रों में भी विस्तार करना चाहिए, चाहे वह जीवन के मामले में हो या वित्त के मामले में। इसका उद्देश्य अधिक-से-अधिक लोगों को जागरूक करना है, ताकि वे अपनी सम्पत्ति, जीवन और अन्य सामान की सुरक्षा कर सकें।"

-एल.एल. भौर्या, आकाशवाणी रायपुर

"हमारे गाँव में हम नियमित रूप से हाथी संरक्षण के लिए हर दिन प्रसारित होने वाला 'हमर हाथी–हमर गोठ' रेडियो कार्यक्रम सुनते हैं। प्रधानमंत्री ने भी अपने 'मन की बात' के दौरान इस पहल की सराहना की है। हाथी अक्सर जंगलों में घूमते रहते हैं और इसलिए मनुष्यों और हाथियों के बीच सामंजस्यपूर्ण सम्बंध होना आवश्यक है। लोगों और हाथियों के बीच अक्सर होने वाले संघर्ष और खतरों को रोका जाना चाहिए। संरक्षण का यह दृष्टिकोण दोनों समुदायों के लाभ के लिए महत्त्वपूर्ण है।"

-प्रवीण यादव, स्थानीय निवासी

भारतीय लोकतंत्र का उत्सव

चुनाव आयोग की विरासत

“‘मन की बात’ के माध्यम से मैं पहली बार वोट करने वालों से कहूँगा कि वे अपना नाम वोटर लिस्ट में ज़रूर जुड़वाएँ। वे इसे राष्ट्रीय मतदाता सेवा पोर्टल और मतदाता हेल्पलाइन ऐप के माध्यम से आसानी से ऑनलाइन पूरा कर सकते हैं।”

-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
(‘मन की बात’ सम्बोधन में)

भारत को दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र का खिताब हासिल है, जो विविध संस्कृतियों, भाषाओं और क्षेत्रों से बुना हुआ एक जीवंत गुलदस्ता है। संविधान में सन्निहित इसकी लोकतांत्रिक प्रणाली नियमित, स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनावों के साथ चलती है, जो 900 मिलियन से अधिक योग्य मतदाताओं को शासन के विभिन्न स्तरों पर अपने प्रतिनिधियों को चुनने का अधिकार देती है। केंद्रीय संसद (लोकसभा) से लेकर कई राज्य विधानसभाओं तक, चुनावी प्रक्रिया भारत के राजनीतिक परिदृश्य की आधारशिला के रूप में कार्य करती है, देश के तीव्र विकास का मार्ग प्रशस्त करती है और देशवासियों के निर्णय को प्रतिबिम्बित करती है।

भारत का संविधान 26 जनवरी, 1950 को लागू हुआ। डॉ. भीमराव आम्बेडकर के नेतृत्व में मसौदा समिति ने संविधान का मसौदा तैयार करने के लिए कड़ी मेहनत की। भारत को चुनाव कराने के लिए नियम और उपनियम मिले और अंततः देश भारत गणराज्य बन गया। संविधान लागू होने के साथ ही चुनाव आयोग का गठन किया गया।

“एक निर्वाचित प्रतिनिधित्व की अवधारणा लोकतंत्र के सबसे बुनियादी गुणों में शामिल है। यह अवधारणा भारतीय समाज में मुख्य रूप से समाहित है। निर्वाचन आयोग यह सुनिश्चित करता है कि भारत का लोकतांत्रिक लोकाचार हमेशा की तरह चमकता रहे।”

-सच्चिदानंद जोशी
सदस्य सचिव, आईजीएनसीए

भारतीय संविधान के तहत 25 जनवरी, 1950 को स्थापित भारत निर्वाचन आयोग की जड़ें डॉ. बी.आर. आम्बेडकर के विज़न में निहित हैं। उन्होंने चुनावी सत्यनिष्ठा की रक्षा के लिए एक स्वतंत्र निकाय का समर्थन किया, जिसमें सभी स्तरों पर – संसद, राज्य विधानसभाएँ, राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति चुनावों का अधीक्षण, निर्देशन और नियंत्रण शामिल है।

निर्वाचन आयोग मतदाता सेवाओं के लिए दो मुख्य मंच प्रदान करता है : वोटर पोर्टल और वोटर हेल्पलाइन ऐप। वोटर पोर्टल के माध्यम से नागरिक नए मतदाता के रूप में पंजीकरण करना, अपने मतदाता विवरण में बदलाव के लिए आवेदन करना, अपने आवेदन की स्थिति को ट्रैक करना, अपने मतदाता फोटो पहचानपत्र (ईपीआईसी) का डिजिटल वर्जन डाउनलोड करना और मतदान केंद्र का स्थान ढूँढना आदि जैसी विभिन्न सेवाओं तक पहुँच सकते हैं। वोटर हेल्पलाइन ऐप कुछ अतिरिक्त सुविधाओं के साथ मोबाइल प्लेटफॉर्म पर समान सेवाएँ प्रदान करता है।

ऑनलाइन पोर्टल से लेकर सोशल मीडिया चर्चा तक, भारत निर्वाचन आयोग युवा मतदाताओं को आकर्षित करने के लिए डिजिटल हो गया है। आकर्षक ऐप्स, प्रभावशाली अभियान और कैम्पस

सीईसी सुकुमार सेन (बाएँ) और चुनाव आयोग के सचिव पी.एस. सुब्रमण्यम अक्तूबर 1951 में मतपेटियों की जाँच करते हुए।

सामान्य निर्वाचन

- 14 राष्ट्रीय पार्टियाँ, 39 राज्यों की पार्टियाँ
- 26 भारतीय राज्यों में 401 निर्वाचन क्षेत्रों में 489 सीटें
- 1874 उम्मीदवार चुनाव में उतरे
- 173 मिलियन लोगों की पात्र जनसंख्या से 45.7% मतदाता

आउटरीच कार्यक्रमों का उद्देश्य मतदान सम्बंधी मिथकों को दूर करना और जागरूक भागीदारी को सशक्त बनाना है। इंटरएक्टिव वर्कशॉप और मॉक पोल इस पूरी प्रक्रिया को उजागर करते हैं, जबकि स्कूलों में ईवीएम से युवाओं को परिचित कराया जाता है। अंतर को पाटकर और लोकतंत्र को बढ़ावा देकर भारत निर्वाचन आयोग बेपरवाही को कार्रवाई में बदलने की उम्मीद करता है। आकाशवाणी नागरिकों के लिए चुनावी प्रक्रिया के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा करने, सवाल उठाने और सीधे निर्वाचन अधिकारियों और विशेषज्ञों के साथ संदेह दूर करने के लिए एक विशेष इंटरैक्टिव फोन-इन कार्यक्रम भी आयोजित करता है।

1951 में पहले आम चुनाव के बाद से मतदान प्रतिशत में अत्यधिक सुधार देखा गया है। 2019 में आयोजित 17वें आम चुनाव मानव इतिहास की सबसे बड़ी लोकतांत्रिक प्रक्रिया थी, जिसमें 10.378 लाख मतदान केंद्रों पर 61.468 करोड़ मतदाता थे। 2019 के चुनावों में भारतीय चुनावों के इतिहास में पुरुष-महिला के बीच सबसे कम अंतर भी देखा गया। मतदाता लिंग अनुपात, जिसने 1971 से सकारात्मक रुझान दिखाया है, 2019 के आम चुनावों में 926 था।

भारतीय मतदाताओं को सशक्त बनाने और जागरूक भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए निर्वाचन आयोग का प्रमुख कार्यक्रम SVEEP एक बहुआयामी दृष्टिकोण अपनाता है। आकर्षक संदेश बस शेल्टरों और मेट्रो पैनलों जैसे सार्वजनिक स्थानों पर सुशोभित होते हैं, जबकि समाचारपत्र और रेडियो चैनल विभिन्न मतदाता समूहों के अनुरूप जानकारीपूर्ण विज्ञापन और जिंगल दिखाते हैं। समाचारपत्रों और सोशल मीडिया अभियानों के माध्यम से

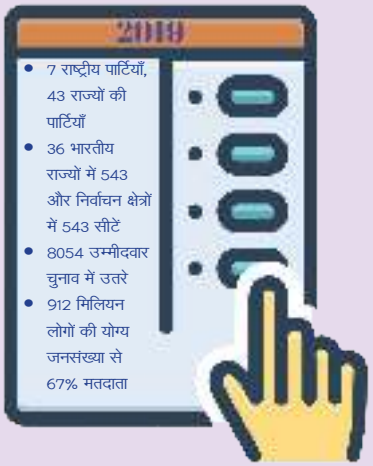

वितरित किए गए पर्चे, सार्वजनिक नोटिस और रंगीन विज्ञापन मतदाता जागरूकता को और बढ़ाते हैं। इसके अतिरिक्त SVEEP मोबाइल प्रौद्योगिकी का लाभ उठाता है, जनता को सीधे सूचनात्मक एसएमएस और व्हाट्सएप संदेश भेजता है, विभिन्न चैनलों पर व्यापक मतदाता शिक्षा सुनिश्चित करता है।

दशकों से भारत निर्वाचन आयोग को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा है, लेकिन आदर्श आचार संहिता, इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (ईवीएम), और वोटर वेरिफाइड पेपर ऑडिट ट्रेल (वीवीपीएटी) जैसे इसके नवाचारों ने पारदर्शिता और विश्वास को बढ़ावा दिया है। आज भारत निर्वाचन आयोग एक दुर्जेय शक्ति है, जो सावधानीपूर्वक योजना और सटीकता के साथ दुनिया की सबसे बड़ी चुनावी प्रक्रिया का संचालन कर रहा है। समावेशिता के प्रति इसकी प्रतिबद्धता लैंगिक संवेदनशीलता और दिव्यांगजनों के लिए पहुँच जैसी पहलों में स्पष्ट है। जैसे-जैसे भारत का लोकतंत्र फल-फूल रहा है, भारत निर्वाचन आयोग की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती जा रही है। स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनावों के प्रति इसका समर्पण यह सुनिश्चित करता है कि प्रत्येक नागरिक की आवाज़ सुनी जाए, जो देश की नियति को आकार देती है।

सभा से संसद तक : भारत के विकसित लोकतंत्र के स्तम्भ

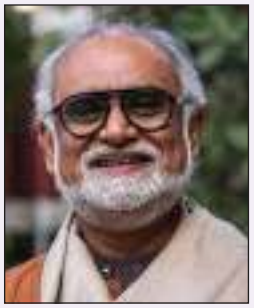

सच्चिदानंद जोशी
सदस्य सचिव, आईजीएनसीए

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 25 सितम्बर, 2021 को संयुक्त राष्ट्र महासभा (यूएनजीए) के 76वें सत्र को सम्बोधित करते हुए भारत को 'लोकतंत्र की जननी' बताया था। उन्होंने एक महत्त्वपूर्ण घोषणा में भारत के लोकतांत्रिक लोकाचार की आधारशिला के रूप में हमारी लोकतांत्रिक विरासत की गहरी जड़ों के महत्त्व का ज़िक्र किया, जो यह सुनिश्चित करती है कि कोई भी व्यक्ति हाशिए पर न रहे। भारत की सशक्त लोकतांत्रिक परम्परा की पुष्टि करते हुए उन्होंने भारत को लोकतांत्रिक मूल्यों के पथप्रदर्शक के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया। उनका वक्तव्य मुख्य रूप से इस तथ्य पर आधारित है कि हमारे लोकतंत्र का मूल आधार उन मूल्यों और सिद्धांतों का सम्मिश्रण है, जो उसकी सभ्यता की हज़ारों साल की यात्रा की उपलब्धि है।

एक निर्वाचित प्रतिनिधित्व की अवधारणा लोकतंत्र के सबसे बुनियादी गुणों में शामिल है। यह अवधारणा भारतीय समाज में मुख्य रूप से समाहित है। वैदिक साहित्य के पन्नों को पलटते समय, कोई भी व्यक्ति समिति और सभा शब्द को देख सकता है, जो 'एक साथ मिलना' या अधिक विशेष रूप से 'सभा' को दर्शाता है। समिति का मुख्य कार्य राजन (राजा) को निर्वाचित करना और पुनः निर्वाचित करना था। सभा शास्त्रीय भारतीय समाज का एक अन्य महत्त्वपूर्ण घटक था, जिसे समिति की बहन माना जाता था। इस प्रकार, समिति और सभा, सामूहिक जीवन के संचालन के लिए प्रारम्भिक भारत में विकसित सबसे प्राचीन संस्थाओं में से हैं।

प्रारम्भिक मध्ययुगीन काल में स्थानीय स्वशासन विभिन्न राजवंशों, विशेष रूप से गुप्त, पांडयान, चोल और अन्य के शासन के तहत शासन की पहचान के रूप में विकसित हुआ। इन राजवंशों ने क्षेत्र के राजनीतिक परिदृश्य को आकार देने और विकेंद्रीकरण और स्थानीय भागीदारी को प्रोत्साहित करने वाली प्रशासनिक प्रणालियों की स्थापना में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। भारत का लोकतंत्र विकेन्द्रीकृत शक्ति, समावेशिता, न्यायिक स्वतंत्रता और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की विशेषता वाले एक बहुआयामी मॉडल के रूप में विकसित हुआ है। भारत की लोकतांत्रिक आधारशिला ने इसे दुनिया के लिए एक अद्वितीय उदाहरण के रूप में स्थापित किया है, जो संस्थागत तंत्र और व्यक्तिगत सोच, दोनों में गहराई से निहित है।

इस धारणा को सामने लाने के लिए प्रधानमंत्री मोदी के ठोस प्रयास

लोकतांत्रिक मूल के इर्द-गिर्द वैश्विक अभिव्यक्ति को नया आकार देने की भारत की महत्त्वाकांक्षा के उदाहरण हैं। ऐसा करते हुए, भारत का लक्ष्य मौजूदा अवधारणा को चुनौती देना और लोकतंत्र के विकास की अधिक सूक्ष्म और विविध समझ में योगदान देना है।

हाल ही में निर्मित नया संसद भवन भी भारत के अंतर्निहित लोकतांत्रिक आख्यान में एक महत्त्वपूर्ण क्षण का प्रतीक है। यह उस लोकतांत्रिक चेतना की निरंतरता का प्रतीक है, जो सहस्राब्दियों से विकसित हुई है, जो सदियों पुराने मूल्यों में निहित रहते हुए बदलते समय के साथ तालमेल बिठाती है। यह असाधारण इमारत लोकतंत्र की जीवंत भावना का एक सुदृढ़ प्रमाण है, जो हमारी ऐतिहासिक यात्रा के साथ-साथ चलती है। इसका डिज़ाइन और निर्माण विभिन्न सांस्कृतिक प्रभावों का सामंजस्यपूर्ण सम्मिश्रण है, जो भारत को परिभाषित करने वाले बहु सांस्कृतिक गुलदस्ते को दर्शाता है। संस्कृतियों का यह सम्मिश्रण उस समावेशिता को दर्शाता है, जो लोकतंत्र यानी विविधता को अपनाने और प्रतिनिधित्व, भागीदारी तथा सामूहिक निर्णय लेने के सामान्य आदर्शों के तहत लोगों को एकजुट करने के क्रम में मौलिक है।

निर्वाचन लोकतंत्र का सबसे बड़ा उत्सव है। लगभग 96 करोड़ मतदाताओं के बल पर भारत विश्व भर में सबसे अधिक मतदाताओं वाला देश है। यह संख्या अमरीका के मतदाताओं से तीन गुना और यूरोप के मतदाताओं से डेढ़ गुना है। हमारे पास दूर-दराज के मतदाताओं की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए अधिकतम संख्या में मतदान केंद्र हैं। एक स्वतंत्र निर्वाचन आयोग सावधानीपूर्वक निर्वाचन का आयोजन करता है। इस पूरी प्रक्रिया में निर्वाचन आयोग यह सुनिश्चित करता है कि भारत का लोकतांत्रिक लोकाचार हमेशा की तरह चमकता रहे।

बीच गेम्स 2024, दीव
सूर्य, रेत और खेल का संगम

"आज खेलों की दुनिया में भी भारत नित नई ऊँचाइयों को छू रहा है और इसके लिए ज़रूरी है कि खिलाड़ियों को ज़्यादा-से-ज़्यादा खेलने का मौका मिले और देश में भली-भाँति के स्पोर्ट्स टूर्नामेंट भी आयोजित हों। इसी सोच के साथ आज भारत में नए-नए स्पोर्ट्स टूर्नामेंट आयोजित किए जा रहे हैं।"

— प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी (109वीं 'मन की बात' में)

नए साल की शुरुआत के साथ ही भारत के खेल परिदृश्य में एक अनोखे कार्यक्रम का साक्षी बना–दीव। यहाँ देश के पहले बीच गेम्स 2024 का आयोजन किया गया। 4 से 11 जनवरी, 2024 तक दीव के घोघला बीच में आयोजित अपनी तरह का यह पहला मल्टी-स्पोर्ट्स बीच इवेंट बीच स्पोर्ट्स के अनूठे रोमांच को अपनाने और उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर बढ़ावा देने की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम है।

इस संस्करण में 1,400 से अधिक एथलीट्स ने आठ अलग-अलग खेलों में अपने कौशल का प्रदर्शन किया– रस्साकशी, समुद्री तैराकी, पेंचक सिलेट, मलखम्ब, बीच वॉलीबॉल, बीच कबड्डी, बीच सॉकर और बीच बॉक्सिंग। ये खेल परिवर्तनकारी उद्देश्यों के प्रतीक के रूप में तटीय इलाकों में पर्यटन, खेल और सस्टेनेबिलिटी के फ़्यूज़न के रूप में कार्य करेंगे।

डॉल्फ़िन 'पर्ल' बीच गेम्स 2024 का आधिकारिक शुभंकर था। पर्ल खूबसूरती से तटीय इलाके की भावना को दर्शाता है, जिससे खुशी और एकता की भावना पैदा होती है।

लैंडलॉक्ड मध्य प्रदेश सात स्वर्ण सहित कुल 18 पदकों के साथ पदक तालिका में शीर्ष पर रहते हुए चैम्पियन के रूप में उभरा।

अनुराग सिंह ठाकुर
केंद्रीय युवा कार्यक्रम एवं खेल और सूचना एवं प्रसारण मंत्री

दीव बीच गेम्स 2024
भारत के खेल परिदृश्य में एक मील का पत्थर

एक ऐतिहासिक कदम में, भारत ने इस साल की शुरुआत में दीव में अपने पहले बीच गेम्स की मेज़बानी की, जो देश के खेल परिदृश्य में एक महत्त्वपूर्ण बदलाव का प्रतीक है। इस विशेष साक्षात्कार में केंद्रीय युवा मामले और खेल मंत्री अनुराग सिंह ठाकुर ने बीच गेम्स की शानदार सफलता के बारे में बात करते हुए खिलाड़ियों, पर्यटन और भारत में समुद्र तट खेलों के भविष्य पर इसके प्रभाव पर प्रकाश डाला।

दीव बीच गेम्स 2024 का आयोजन एक अनूठा प्रयास है। समुद्र तट के पास खेल का आयोजन अत्यधिक भव्य ही नहीं, शानदार आयोजन साबित हुआ। इससे भविष्य में कई सम्भावनाएँ भी तैयार हुई हैं। इसके तहत आठ अलग-अलग खेलों का आयोजन किया गया और 21 वर्ष से कम उम्र के 1,400 से अधिक खिलाड़ियों ने भाग लिया। सबसे दिलचस्प तथ्य यह था कि मध्य प्रदेश जैसे राज्य के खिलाड़ियों ने भी शानदार प्रदर्शन किया, जहाँ कोई समुद्र तट नहीं है। इससे पर्यटन और खेल के क्षेत्र में भविष्य की सम्भावनाओं के द्वार खुले हैं।

समुद्रतटीय इलाकों के खिलाड़ियों को भी नए अवसर मिलेंगे। बीच फुटबॉल में लक्षद्वीप की टीम ने जिस तरह से महाराष्ट्र को 5-4 से हराया, वह बेहद रोमांचक मैच था। लक्षद्वीप में शायद पहले ऐसा सम्भव नहीं हुआ था, लेकिन उसके खिलाड़ी बीच फुटबॉल में आगे बढ़े। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत के पारम्परिक खेलों पर जोर दिया गया है, चाहे वह राष्ट्रीय खेल हों या खेलो इंडिया कार्यक्रम। इसी तरह, उन्होंने बीच गेम्स खेलों की क्षमता का पूर्ण उपयोग करने के लिए बहुत बड़ा प्रोत्साहन दिया है।

आज दीव पूरे भारत और दुनिया भर में प्रमुखता से उभरा है। अब इससे कई सम्भावनाएँ तैयार होती हैं। भविष्य में भारत अंतरराष्ट्रीय स्तर की बीच गेम्स चैम्पियनशिप के आयोजन पर भी अपना दावा कर सकता है। लम्बी कोस्टलाइन होने के बावजूद आज तक भारत में कभी भी बीच गेम्स का आयोजन नहीं किया गया था। यह सराहनीय है कि दमन और दीव प्रशासन खेलों का कुशलतापूर्वक आयोजन और प्रधानमंत्री के दृष्टिकोण को साकार करने में सक्षम था।

बीच गेम्स से समुद्र तट पर्यटन और बीच गेम्स को बढ़ावा मिलेगा। अब समुद्र तट पर खेलने के इच्छुक खिलाड़ी समुद्र तट की परिस्थितियों के अनुसार अभ्यास कर सकेंगे। उदाहरण के लिए, घास पर दौड़ने के लिए अलग और समुद्र तट पर दौड़ने के लिए अलग प्रकार का प्रयास करना पड़ता है। इसी तरह, समुद्र तट पर फुटबॉल खेलने के लिए भिन्न अभ्यास की आवश्यकता होती है। इतना ही नहीं, प्रदर्शन से परिणाम देने के लिए खिलाड़ियों को लगातार अभ्यास करने और पूर्ण समर्पण की आवश्यकता है। मुझे लगता है कि कई नए तरह के अवसर अब उपलब्ध होंगे।

इस बार केवल आठ खेलों का आयोजन किया गया, लेकिन भविष्य में और भी खेल इसमें शामिल किए जाएँगे। युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय इस सम्बंध में अपनी अगली कार्ययोजना पर विचार कर रहा है कि इन खेलों को वार्षिक खेल कैलेंडर में कैसे शामिल किया जाए और इन खेलों से आगे की सम्भावनाओं पर विचार किया जा सके। मैं उनके विज़न को हमारे साथ साझा करने के लिए प्रधानमंत्री को धन्यवाद देना चाहता हूँ। हम उनके विज़न को उन ऊँचाइयों तक ले जाने के लिए प्रतिबद्ध हैं, जहाँ पहले कभी पहुँचा नहीं गया हो।

प्रधानमंत्री ने सिर्फ एक विजन ही नहीं रखा है, बल्कि संसाधन और सुविधाएँ भी उपलब्ध कराई हैं। उन्होंने हमारे भारतीय एथलीट्स को भी लगातार समर्थन दिया है और उनसे कहा है कि 'खेलो तो खिलोगे'। प्रधानमंत्री ने खेलो इंडिया के लिए जहाँ 3000 करोड़ रुपये से ज़्यादा का बजट दिया है, वहीं पारम्परिक खेलों को भी बढ़ावा दिया है। इन सबके साथ, भारतीय एथलीट्स ने ओलम्पिक खेलों में इस नए जोश को प्रतिबिम्बित करते हुए अच्छा प्रदर्शन किया। एशियाई खेलों में भी भारत ने 100 से अधिक पदक जीते। अब बीच गेम्स के जरिए हम एक नई दिशा में आगे बढ़ेंगे। भारत एक नए क्षेत्र में कदम रखने जा रहा है। भविष्य में हम देश ही नहीं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी कई बीच गेम्स का आयोजन कर सकेंगे।

परीक्षा पे चर्चा 2024

परीक्षा पे चर्चा (पीपीसी) भारत में आयोजित एक वार्षिक कार्यक्रम है, जिसमें प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी देश भर के छात्रों, शिक्षकों और अभिभावकों के साथ बातचीत करते हुए आराम से और तनावमुक्त तरीके से परीक्षा देने के टिप्स बताते हैं। यह आयोजन युवाओं के लिए तनावमुक्त माहौल बनाने के लिए प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में एक बड़े आंदोलन - एग्ज़ाम वॉरियर्स - का हिस्सा है।

पहला पीपीसी कार्यक्रम 2018 में आयोजित किया गया था और तब से हर साल इसे आयोजित किया जाता है। यह आयोजन आमतौर पर बोर्ड परीक्षा शुरू होने से ठीक पहले फरवरी या मार्च में आयोजित किया जाता है। पीपीसी में भाग लेने के लिए छात्र, शिक्षक और अभिभावक MyGov वेबसाइट पर पंजीकरण करते हैं, जो आमतौर पर दिसम्बर या जनवरी में खुलती है।

इस वर्ष 28 जनवरी को आयोजित 7वें कार्यक्रम में 2.26 करोड़ पंजीकरण हुए, जो अभूतपूर्व है। भारत मंडपम, नई दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम में लगभग 3000 प्रतिभागियों ने भाग लिया और बाहरी दबाव और तनाव, साथियों के दबाव और दोस्तों के बीच प्रतिस्पर्धा, छात्रों को प्रेरित करने में शिक्षकों और माता-पिता की भूमिका, स्वस्थ जीवन-शैली बनाए रखने, कैरियर की प्रगति, नित नई-नई प्रौद्योगिकियों के आगमन जैसे विषयों पर प्रधानमंत्री के साथ बातचीत की।

2020 में 50 दिव्यांग विद्यार्थियों ने भी संवाद कार्यक्रम में हिस्सा लिया। 2021 में पहली बार अन्य देशों के 81 छात्रों ने प्री-पीपीसी रचनात्मक लेखन प्रतियोगिता में भाग लिया। पीपीसी कार्यक्रम छात्रों, शिक्षकों और अभिभावकों के लिए एक मूल्यवान संसाधन है। यह परीक्षा के तनाव से कैसे निपटें और परीक्षा में सफलता कैसे प्राप्त करें, इसके बारे में सुझाव देता है।

वर्षवार पंजीकरण

मन की बात

प्रतिक्रियाएँ

मन की बात

मन की बात

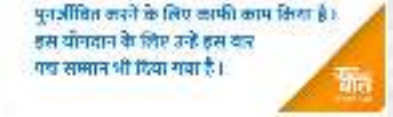

Vishnu Deo Sai
@vishnudsai

माननीय प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी ने मन की बात कार्यक्रम के संस्करण में नारायणपुर के 'वैद्यराज पद्मश्री श्री हेमचंद मांझी जी' के सामाजिक कार्यों की सराहना।

#MannKiBaat
Translate Tweet

Akashvani आकाशवाणी

Hon'ble PM Shri @narendramodi praises 'Hamar Hathi, Hamar Goth' programme of Akashvani.

The programme is broadcast by 4 Akashvani stations in Chhattisgarh.

Live - youtube.com/live/

#MannKiBaat

Power of collectivity to drive growth, says PM

Lauds Cleanliness Campaign At Religious Sites

मन की बात कार्यक्रम में किया जिक्र

हमर हाथी-हमर गोठ रेडियो कार्यक्रम को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सराहा

कहा- अनूठी पहल का दूसरे भी उठा सकते हैं लाभ

रामलला की प्राण प्रतिष्ठा ने करोड़ों लोगों को एक सूत्र में बांधा : मोदी

मन की बात : पीएम ने बताया रामराज का महत्व, कहा-संविधान निर्माताओं ने भी ली थी प्रेरणा

हर तरफ नारी शक्ति का लहरा रहा परचम

यूपी के महिला समूह के प्रयासों की सराहा

आज छात्रों से परीक्षा पर करेंगे चर्चा

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मन की बात कार्यक्रम में किया खुलासा

अब सभी डॉक्टर एक जैसी भाषा में लिखेंगे दवा की पर्ची

अंगदान करने से बच सकती है किसी की जिंदगी: मोदी

মনের কথায় রামের কথা

ଅଯୋଧ୍ୟା ରାମମନ୍ଦିର ଦେଶକୁ ଏକଜୁଟ କରିଛି

PM's highlights success stories of SHGs & women athletes

Modi: Ram in everyone's heart, Ram Rajya inspired even Constitution framers

પ્રભુ રામનું શાસન આપણા બંધારણ નિર્માતાઓ માટે પણ પ્રેરણાનો મુખ્ય સ્રોત હતોઃ પીએમ મોદી

ଗୋଟିଏ ଭୋଟ୍ ଦେଶର ଭାଗ୍ୟ ବଦଳାଇପାରେ

प्राणप्रतिष्ठा ने करोड़ों को एक सूत्र में बांधा : मोदी

நாட்டின் மொத்த பலத்தை பறைசாற்றிய ஸ்ரீராமர் பிரதிஷ்டை விழா !

ഭരണഘടനാ ശില്പികൾക്ക് ശ്രീരാമൻ പ്രചോദനം: മോദി

'ਮਨ ਕੀ ਬਾਤ' 'ਚ ਬੋਲੇ ਮੋਦੀ, ਰਾਮਲੱਲਾ ਦੀ ਪ੍ਰਾਣ ਪ੍ਰਤਿਸ਼ਠਾ ਨੇ ਕਰੋੜਾਂ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਇੱਕ ਸੂਤਰ 'ਚ ਬੰਨ੍ਹਿਆ

بھگوان رام کی حکمرانی آئین سازوں کے لیے تحریک کا ذریعہ: مودی

രാജ്യം അമൃതകാലത്തിന്റെ ആവേശത്തിൽ: പ്രധാനമന്ത്രി

ರಾಮನ ಆಡಳಿತ ಸಂವಿಧಾನಕರ್ತರಿಗೆ ಪ್ರೇರಣೆ

'परीक्षा पे चर्चा' शिक्षा पर चर्चा का अच्छा माध्यम बना : मोदी

नई दिल्ली, प्रेट्र : छात्रों के साथ वार्षिक 'परीक्षा पे चर्चा' से एक दिन पहले प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को कहा कि यह शिक्षा और परीक्षा से संबंधित मुद्दों पर चर्चा करने का बहुत अच्छा माध्यम बनकर उभरा है। 'मन की बात' कार्यक्रम में प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि इस वर्ष 2.25 करोड़ से अधिक विद्यार्थियों ने कार्यक्रम के लिए रजिस्ट्रेशन किया है, जबकि 2018 में जब यह कार्यक्रम पहली बार आयोजित किया गया था, उस वक्त यह संख्या केवल 22 हजार थी।

ভারতীয় নারীরা সব ক্ষেত্রেই বিস্ময়কর কাজ করছেন : প্রধানমন্ত্রী

Modi: Power of collectivity will take our country to new heights of success

► From P 1

The PM said he had requested people to run a cleanliness campaign from Makar Sankranti to Jan 22 and he felt good that lakhs had joined with devotion and cleaned religious places.

"Many have sent me pictures and videos — this sentiment should not diminish, this campaign should not stop. This power of collectivity will take our country to new heights of success," he added.

Describing National Voters Day, celebrated on January 25, as an important day for "our glorious democratic traditions", Modi said, "To enable every citizen of India to exercise the democratic right, our Election Commission sets up polling booths even in places where there is only one voter. I would like to commend the Election Commission, which has made relentless efforts to strengthen democratic values in the country."

ভারতীয় নারীরা সব ক্ষেত্রেই বিস্ময়কর কাজ করছেন : প্রধানমন্ত্রী

THE HINDU

Mann ki Baat: Modi highlights display of woman power in R-Day Parade

ZEE DELHI NCR हरियाणा

Mann ki Baat: 2024 का पहला 'मन की बात' कार्यक्रम, महिला सशक्तिकरण पर रहा पूरा एपिसोड

LOKMAT TIMES

Mann Ki Baat Highlights: Key Takeaways from PM Modi's First Radio Programme of 2024

THE ECONOMIC TIMES

From 22,000 in 2018, students registered for 'Pariksha Pe Charcha' reach 2.25 cr: PM Modi

हिन्दुस्तान

मन की बात : पीएम मोदी ने एथलीट बेटियों की खूब प्रशंसा की

THE TIMES OF INDIA

Ayush ministry is codifying traditional med data, says PM Modi

अमर उजाला

'मन की बात': पीएम मोदी ने की छत्तीसगढ़ के 'हमर हाथी-हमर गोठ' रेडियो कार्यक्रम की तारीफ, कहा- अनूठी मिसाल है ये

मन की बात

के सभी संस्करणों को पढ़ने के लिए
QR कोड को स्कैन करें।

सत्यमेव जयते

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार